समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार का मासिक

उत्तर प्रदेश

अगस्त–2025, वर्ष 50

₹ 15/-

राष्ट्र अभिव्यक्ति

–विश्वभूषण (पी.सी.एस.)

राष्ट्र प्रेम में डूबा भक्त
करता भावों को ऐसे व्यक्त
उद्विग्न मानस पर छाया
इष्ट देव–सा भाव सशक्त।

आदर्श वीरता पथ पर जीवन
साहस सद्गुण से हो संपूर्ण
निजता अर्पित किया राष्ट्र को
हर आकांक्षा कर चूर्ण चूर्ण।

आशुतोष के डमरू गर्जन
हम सरस्वती वीणा की प्रतिध्वनि
चक्र सुदर्शन के प्रलय वेग
हम गांडीव के शर भीषण।

आत्मोत्सर्ग का प्रतिबद्ध राग
हर भारतवासी अब रहा जाग
रण भेरी बजती जागो अचेत
दो मातृ भूमि पर शीश त्याग।

अब परिवेश बदलना होगा
बहुत संभल कर चलना होगा
प्रत्यक्ष शिखंडी लाख खड़े हों
अप्रत्यक्षों से लड़ना होगा।।

साभार : 'मासूम शहर' वर्ष–2025,
पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी

◆

पता : वाराणसी (उ.प्र.)
मो. : 9454321022

अनुक्रम

इतिहास

- वीरों की धरती, बागी बलिया ❑ रेखा शाह आरबी / 3

कहानियाँ

- हरी आँखें ❑ आभा श्रीवास्तव / 5
- मेमोरी फुल ❑ प्रगति गुप्ता / 8
- सजा ❑ भारती मिश्रा / 13
- दिखता नहीं क्या ? ❑ सियाराम पांडेय 'शांत' / 18

गजलें

- विनय मिश्र की चार गजलें / 21

कविताएँ

- राष्ट्र अभिव्यक्ति... ❑ विश्व भूषण / आवरण–2
- क्या ये भोर है... ❑ कौशिक भरद्वाज / आवरण–3
- गजलें... ❑ विनय मिश्र / 21
- भूल जाओ... ❑ रंजना जायसवाल / 23
- ''कुछ अधूरी बातें... ❑ अनन्या शुक्ला / 24
- निर्णय... ❑ जितेन्द्र कुमार दुबे / 25
- संसार... ❑ शिवकुमार मिश्र 'नीलकण्ठ' / 27
- बचपन की अठखेली... ❑ अलका अस्थाना / 28

पुस्तक समीक्षा

- फिराक़ की शायरी ❑ सूर्यकांत शर्मा / 29

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 50 ❑ अंक 78
❑ अगस्त–2025

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **विशाल सिंह**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

❑ **चन्द्र विजय वर्मा**
सहा. निदेशक, सूचना / सम्पादक

सहयोग : ❑ **अजय कुमार द्विवेदी / जयेन्द्र सिंह**
सहयुक्त सम्पादक

दिनेश कुमार गुप्ता
उप सम्पादक

भीतरी रेखांकन : **आस्था / रीतिका / सिद्धेश्वर**

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 7705800978, 9412674759
ईमेल : upmasik@gmail.com

दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

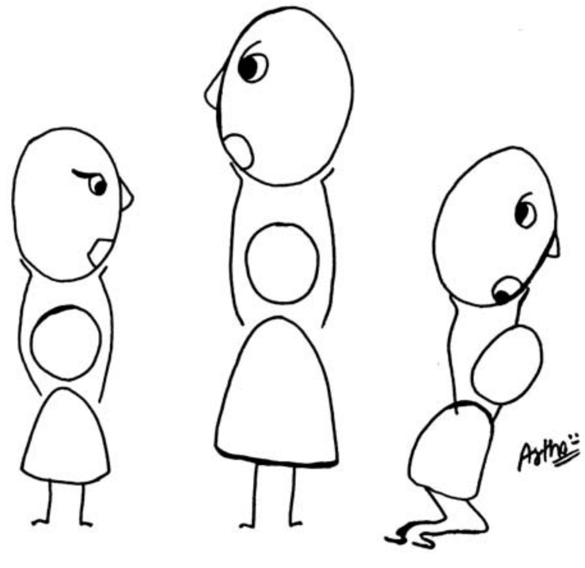

पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रूपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
–सम्पादक

आवर्तन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गाथा केवल गांधीजी के अहिंसक आंदोलन तक सीमित नहीं रही, अपितु इस संघर्ष में अनेक क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता की मशाल को प्रज्ज्वलित किया। इन्हीं क्रांतिकारी प्रयासों में काकोरी कांड–1925 (परिवर्तित नाम काकोरी ट्रेन एक्शन) भारत के स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलनों में अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना बनकर उभरा, जिसने न केवल अंग्रेजी शासन को हिला दिया, अपितु भारतीय युवाओं को क्रांति की राह पर प्रेरित किया। यह कांड केवल लूट की घटना नहीं थी, अपितु इसके पीछे थी स्वाधीनता की स्पष्ट योजना, साहसिक संगठन और जागरूक राजनीतिक उद्देश्य। इस घटना से लखनऊ से लगभग 23 किलोमीटर दूरी पर स्थित काकोरी रेलवे स्टेशन पर अंग्रेजों के विरुद्ध बड़ी हिंसात्मक आंदोलन की नींव रखी गई। इस वर्ष 9 अगस्त, 2025 को काकोरी ट्रेन एक्शन की 100 वीं वर्षगांठ मनाई जा रही है।

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के युवा क्रांतिकारियों ने सात अगस्त 1925 को शाहजहांपुर में बैठक कर रणनीति तय की थी। आठ अगस्त 1925 को काकोरी में ट्रेन लूटने की रणनीति बनाई, लेकिन उस दिन वे 10 मिनट देर से पहुँचे और ट्रेन चली गई। उन्होंने अगले दिन 9 अगस्त को काकोरी ट्रेन एक्शन को पूरा किया। तय घटनाक्रम के अनुसार आठ डाउन पैसेंजर से रोजाना जाने वाले अँग्रेजों के खजाने (रुपये 4600) को लूट लिया गया।

काकोरी ट्रेन एक्शन ने अंग्रेजी शासन की चूलें हिला दीं। अंग्रेजों ने घटना करने वाले क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी। केवल 4600 रुपये लूटने वाले इन क्रांतिकारियों को गिरफ्तार करने में लगभग 10 लाख रुपये खर्च किए गए थे। क्रांतिकारियों पर सरकारी खजाना लूटने और हत्या का केस चलाया गया। लगभग 10 महीने मुकदमा चला। फिर क्रांतिकारियों को सजा सुनाई गई थी।

क्रांतिकारियों को पकड़वाने के लिए पांच हजार रुपये के इनाम की घोषणा की गई थी, लेकिन कांड से उत्साहित जनता की क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति और अधिक हो गई थी। खुफिया विभाग के एक वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारी आरए हार्टन को इस घटना की विवेचना का इंचार्ज बनाया गया। घटना के स्वरूप को देखकर हार्टन की समझ में आ गया था कि इस घटना को क्रांतिकारियों ने ही अंजाम दिया है।

काकोरी कांड भारत के स्वतंत्रता संग्राम का वह क्रांतिकारी अध्याय है, जिसने भारतीय युवाओं को आत्मबलिदान, संगठन और राष्ट्रप्रेम का पाठ पढ़ाया। यह केवल ''ट्रेन डकैती'' नहीं थी, अपितु ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संगठित विद्रोह था। रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह के बलिदान ने स्वतंत्रता के मार्ग को आलोकित किया।

काकोरी कांड आज भी हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र की स्वतंत्रता का मूल्य अत्यंत ऊँचा होता है, जिसे समर्पण और साहस से ही प्राप्त किया जा सकता है। काकोरी के शहीद हमारे राष्ट्रीय चरित्र के वे स्तंभ हैं, जिनकी स्मृति में आने वाली पीढ़ियाँ प्रेरणा प्राप्त करती रहेंगी जिन अमर शहीदों के कारण आज हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, उन महान क्रांतिवीरों के बलिदान को सुस्मरण करते हुए कोटिशः नमन।

● दिनेश कुमार गुप्ता

वीरों की धरती, बागी बलिया

❑ रेखा शाह आरबी

वीरों की धरती, बागियों का देश, यह है बागी बलिया उत्तर प्रदेश, यदि ऐसी पहचान बताते हुए कोई व्यक्ति मिले तो आप तुरंत समझ जाइए कि वह यूपी के बलिया जिले का निवासी है। यहां के लोग बहुत ही गर्व से अपनी जन्मस्थली का परिचय देते हैं। यहां के लोगों के मिजाज में थोड़ा सा अक्खड़पन, व्यवहार में अपनापन, बोली में मधुरपन देखने को मिलता है। मीठी चासनी के जैसी भोजपुरी बोली यहां की विशेषता है।

बलिया उत्तर प्रदेश के अंतिम पूर्वी छोर पर स्थित जिला है। जिले की उत्तरी सीमा सरयू नदी तय करती है और इसकी दक्षिणी सीमा गंगा नदी निर्धारित करती है। पूर्व में बिहार के छपरा जिले से सीमा लगती है और पश्चिम दिशा में उत्तर प्रदेश का गाजीपुर और मऊ जिला है। इस जनपद को पतित पावनी गंगा, सरयू, तमसा नदी के साथ–साथ विभिन्न ताल तलैया जैसे सुरहा ताल, मुडियारी ताल, रेवती दहताल आदि जल स्रोतों की अगाध जल राशि से प्रकृति ने समृद्ध और संपन्न बनाया है। उर्वर मृदा कृषि के अनुकूल समशीतोष्ण जलवायु से संपन्न है। इस जनपद का इतिहास बेहद समृद्ध और परिश्रमी निवासियों की कर्मठता की कहानी है।

बलिया का इतिहास बेहद गौरवशाली रहा है। खासकर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के लिए 19 अगस्त, 1942 को बलिया ने ब्रिटिश शासन से खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया था। यहां के देश प्रेमी लोगों के विद्रोही स्वभाव और बहादुरी से अंग्रेज भय खाते थे। अंग्रेजों के प्रति इसी बगावती तेवर के कारण बलिया को बागी बलिया नाम मिला है। यहां के लोगों को पराधीनता बिल्कुल ही पसंद नहीं थी। यह अंग्रेजों के नाक में दम करके रख दिए थे। इस भूमि पर मंगल पांडेय, चित्तू पांडेय जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी जन्म लिए हैं, जिन्होंने आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। यह पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर एवं राजनेता जनेश्वर मिश्र की जन्मस्थली भी है।

साहित्यकारों की नगरी–

बलिया सिर्फ अपनी वीरता के मामले में ही अग्रणी नहीं रहा है, बल्कि कलम के मामले

में भी बेहद धनी रहा है। यहां पर हिंदी कथा–कविता, आलोचना, हास्य और भोजपुरी लोक साहित्य की धारा निरंतर बहती रही है। बलिया के साहित्य आकाश के कुछ महत्वपूर्ण साहित्य नक्षत्र (हजारी प्रसाद द्विवेदी, केदारनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, सूर्यकुमार पांडेय, अतुल कुमार राय) आदि हैं।

महर्षि भृगु की तपस्थली–बलिया जिले की पहचान महर्षि भृगु की तपोभूमि के रूप में है। महर्षि भृगु ने समाज हित में ज्योतिष शास्त्र की पुस्तक भृगु संहिता की रचना की थी। महर्षि भृगु मुनि के शिष्य दर्दर मुनि ने भृगु मंदिर का निर्माण करवाया था। भृगु मंदिर का निर्माण 100 वर्ष पहले हुआ था। पहले का मूल मंदिर गंगा में डूब गया तो वर्तमान मंदिर उसी स्थान पर निर्मित है। मंदिर परिसर में भृगु मुनि और उनके शिष्य दर्दर मुनि की प्रतिमाएं स्थापित है, जो जन सामान्य में श्रद्धा का केंद्र है।

बोली और भाषा–यहां पर मुख्य रूप से जन सामान्य के बोलचाल की भाषा भोजपुरी है। हिंदी भाषा का भी बोलचाल में प्रयोग किया जाता है, लेकिन बलिया के लिए यह कहावत पूरी तरह सार्थक है–''कोस–कोस पर बदले पानी....चार कोस पर बदले बानी'' आप जैसे–जैसे पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ते जाएंगे, आपको भाषा शैली के अंदाज का आभास स्वयं ही हो जाएगा। बलिया की भोजपुरी में पूर्वी शैली के लक्षण मिलते हैं।

बलिया का इतिहास बेहद गौरवशाली रहा है। खासकर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के लिए 19 अगस्त, 1942 को बलिया ने ब्रिटिश शासन से खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया था। यहां के देश प्रेमी लोगों के विद्रोही स्वभाव और बहादुरी से अंग्रेज भय खाते थे। यह अंग्रेजों के प्रति इसी बगावती तेवर के कारण बलिया को बागी बलिया नाम मिला है। यहां के लोगों को पराधीनता बिल्कुल ही पसंद नहीं था। यह अंग्रेजों के नाक में दम करके रख दिए थे। इस भूमि पर मंगल पांडेय, चिंतु पांडेय जैसे महान स्वतंत्रता सेनानी जन्म लिए हैं, जिन्होंने आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। यह पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर एवं राजनेता जनेश्वर मिश्र की जन्मस्थली भी है।

खान पान–बलिया के लोगों के खानपान की बात की जाए तो खानपान में देसी घी, चावल, दाल, मौसमी सब्जियां, दही, अचार का खास महत्व है। यहां सत्तू और सत्तू के व्यंजन लिट्टी चोखा काफी स्वादिष्ट मिलते हैं और मिठाइयों की बात की जाए तो यहां की देसी मिठाइयां जलेबी, पेड़ा, बालूशाही प्रसिद्ध है। तीखे व्यंजनों में छोला भटूरा समोसा आदि स्ट्रीट फूड के रूप में हर जगह मिलेगा।

दर्शनीय स्थल–बलिया जिले में कई ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है। जिला अपने स्वतंत्रता संग्राम, धार्मिक धरोहर और सांस्कृतिक मेलों के लिए सुप्रसिद्ध है। दर्शनीय स्थलों में नगर में स्थित महर्षि भृगु का भृगु मंदिर है। साथ ही सूरहाताल, जो शहर से लगभग 17 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में है। यह एक प्राकृतिक झील और पक्षी अभ्यारण है। यहां सर्दियों में प्रवासी पक्षी आते हैं, जिससे यह बर्ड वाचिंग के लिए प्रसिद्ध है। इसके साथ ही कामेश्वर धाम, चिंतु पांडे स्मारक, नाथ बाबा मंदिर दर्शनीय स्थल हैं। यहां सबसे सुविख्यात ददरी मेला लगता है जो कार्तिक पूर्णिमा से शुरू होता है। इस मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रम, पशु व्यापार और लोक कला के आयोजन होते हैं। मेले में शिरकत करने के लिए अन्य राज्यों से भी काफी संख्या में लोग आते हैं।

कैसे पहुंचें–बलिया पहुंचने के लिए सबसे निकटतम हवाई अड्डा पटना और वाराणसी है। वाराणसी लगभग 150 किलोमीटर और पटना 130 किलोमीटर की दूरी पर है। साथ ही रेल मार्ग और सड़क मार्ग से भी आसानी से पहुंचा जा सकता है। ◆

पता : गिरिजा इलेक्ट्रॉनिक्स, काशीपुर, बलिया–बैरिया राजमार्ग, जिला पोस्ट–बलिया (उत्तर प्रदेश) पि.नं.–277001
मो. : 8736863697

हरी आँखें

❑ आभा श्रीवास्तव

'माइकल एंजेलो' विला में रहने वाली मिसेज जोन्स कितनी अकेली हो चुकी थीं, ये बस वही जान सकती थीं। 63 वर्ष की उम्र में उनके पति विक्टर जोन्स जब उन्हें इस भरी दुनिया में अकेला छोड़ कर चले गए तो उनकी समझ में नहीं आया कि शेष जीवन किसके सहारे और कैसे कटेगा ? विवाह के कई वर्षों बाद तक जब जोन्स दंपति के कोई सन्तान नहीं हुई, तब वे लोग अनाथाश्रम से एक नन्ही सी बच्ची को गोद ले आए, जिसका नाम धरा 'लिली'। हरी आँखों और सुनहरे बालों वाली लिली मात्र तीन बरस तक ही उनके साथ रह पाई। ईश्वर ने बहुत जल्दी ही उसे अपने पास बुला लिया था। तीन चार दिनों के तेज ज्वर से तप्त लिली कब नींद में ही दुनिया छोड़ गई, पता ही न चल सका। शोक और दुःख से व्यथित जोन्स दंपति ने तब, से आपस में ही एक दूसरे को अपना सहारा मान लिया। 'लिली' की याद में उन्होंने अपना पूरा गार्डन ही लिली के फूलों से भर दिया था।

उम्र के इस पड़ाव पर पति का ऐसे अचानक साथ छोड़ जाना मिसेज जोन्स के लिए किसी बड़े सदमे से कम नहीं था। जीवन तो कट ही जाता है कैसे भी, लेकिन जीवन जीने का कोई बहाना तो होना चाहिए। वैसे तो रुपये पैसे की कमी नहीं थी, लेकिन इस विशाल बंगले में अकेला रहना भी किसी सजा से कम तो नहीं था। मिसेज जोन्स ने बहुत सोचा, बहुत सोचा, फिर अखबार में 'पेइंग गेस्ट' के लिए विज्ञापन दे दिया। उनका 'माइकेल ऐन्जिलो' विला शहर से दूर था। बाहर से आने वाले नौकरीशुदा लोग शहर के बीचोबीच रहना चाहते थे। काफी दिनों तक तो उन्हें कोई भी किरायेदार नहीं मिला। एक दिन जब मिसेज जोन्स अपने गार्डन में पौधों की देखभाल में व्यस्त थीं, उनका गेट खड़का। हाथ में हजारा लिए हुए ही वे गेट की तरफ बढ़ीं तो देखा करीब 30–32 साल का एक लड़का वहाँ खड़ा था– "मुझे मिसेज जोन्स से मिलना है।"

"बताएं, मैं ही मिसेज जोन्स हूँ।" हजारा जमीन पर रख एप्रिन से हाथ पोंछते हुए मिसेज जोन्स ने कहा। आगंतुक के आ जाने से उनकी आँखें आशा से चमक उठी थीं।

"मेरा नाम बिप्लव है। कलकत्ता से हूँ। यहाँ फिलिप्स में नौकरी कर रहा हूँ। आपका पेइंग गेस्ट का विज्ञापन देखा। क्या आप मुझे यहाँ रहने की जगह दे सकती हैं। मैं सारे पेपर्स साथ लाया हूँ।" बिप्लव ने स्पष्ट शब्दों में अपनी बात रखी।

मिसेज जोन्स को बातचीत में वो लड़का भला लगा। कलकत्ता से इतनी दूर इस बेगाने शहर में नौकरी करने आया है– उनका दिल ममता से भर गया।

एग्रीमेंट पेपर्स साइन हुए और दो दिन के अंतराल पर बिप्लव अपना सामान लेकर मिसेज जोन्स के गेस्ट रूम में रहने आ गया। कुछ ही दिनों में बिप्लव ने अपने हँसमुख स्वभाव से मिसेज जोन्स का मन जीत लिया। कलकत्ता का ये अनाथ युवक 35 वर्ष का था। चेहरे की मासूमियत और भोलेपन के कारण अपनी उम्र से काफी छोटा दिखता था। मामा मामी की चाकरी करते हुए बिप्लव ने अपनी पढ़ाई पूरी की थी और कुछ समय तक उसने कलकत्ता में नौकरी भी की थी, लेकिन जब देखा कि हर महीने की उसकी पूरी सैलरी कैसे न कैसे मामी झपट लेती हैं तो वो घबरा उठा था। दूर शहर में नौकरी का पहला मौका मिलते ही वो यहाँ चला आया। उसकी रामकथा सुन कर मिसेज जोन्स का मन और भी पिघल गया।

'माइकेल ऐन्जिलो' विला में रहते हुए बिप्लव को एक साल से ऊपर हो चला था। इस बीच वृद्धा मिसेज जोन्स और बिप्लव एक अन्जानी स्नेह डोर से बंध चुके थे। मकान मालिक और पेइंग गेस्ट का नाता तो कबका उनके बीच से हट चुका था, लेकिन बिप्लव उनका किराया हर महीने उनके बैंक अकाउंट में डिपोजिट कर देता था। कई बार मिसेज जोन्स के जी में आया कि बिप्लव से पूछें– कोई अच्छी भली लड़की देख कर वो अपना ब्याह क्यों नहीं कर लेता ? फिर कहीं न कहीं मन में ख्याल भी आता कि बिप्लव इसे अन्यथा न ले ले। उन्हें अपनी मर्यादा को हद से अधिक लाँघने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

बिप्लव ने जिस दिन अपनी नई कार खरीदी, उसने मिसेज जोन्स के पैर छू लिए थे। नई कार में सबसे पहले उसने मिसेज जोन्स को ही बिठाया था।

दिन ऐसे ही बीत रहे थे। मिसेज जोन्स का सूना घर बिप्लव के आ जाने से चहकने लगा था। उसके कमरे से पुराने गीतों की स्वर लहरियाँ घर भर में गूँजती रहतीं। जिन गीतों को मिसेज जोन्स भूल चुकी थी, वो अब अक्सर गुनगुनाती थीं। बिप्लव के लिए उसकी पसंद का खाना बनाना मिसेज जोन्स की आदत में शामिल हो गया था। बिप्लव ने ही उनका फेसबुक और इंस्टाग्राम अकाउंट बनवा दिया था। ई मेल करना भी उन्होंने बिप्लव से सीखा। ये सब सीख सीख कर वो बच्चों जैसी खुश होती रहीं।

फिर एक रात बिप्लव बहुत देर से घर आया और इस बार वो अकेला नहीं था। रात साढ़े दस बजे तक इंतजार करते करते मिसेज जोन्स सोफे पर ही ऊँघ गई थीं कि दरवाजे की घंटी बजी। लपक कर उन्होंने दरवाजा खोला तो बिप्लव के कंधे का सहारा लिए एक लड़की भी थी। उसके रक्तरंजित कपड़े अस्तव्यस्त और कई जगह से फटे थे। अर्धमूर्छित उस लड़की को देख कर लग रहा था कि अब गिरी, तब गिरी।

''आंटी, जरा इसे संभालो। मैं कार ठीक से पार्क करके आता हूँ।'' बिप्लव ने उसे सोफे पर लिटाते हुए कहा। मिसेज जोन्स ने रोशनी में उस लड़की का चेहरा देखा। आधी मुंदी, आधी खुली आँखें जिनकी हरी पुतलियाँ साफ दिख रही थीं। फिर सुनहरे भूरे बाल। सिहर उठी थीं वो। लिली जैसी ... शायद हाँ ... शायद नहीं ...।

दरवाजे से भीतर आते बिप्लव ने देखा कि मिसेज जोन्स ने उस लड़की का सिर गोद में ले रखा है।

"कौन है ये ? कैसे जानता है तू इसे ? पता है ये पेट से है।'' मिसेज जोन्स की प्रश्नवाचक दृष्टि बिप्लव पर थी– "कहीं तूने ही तो इसका सर्वनाश...,'' कहते हुए रुक गई थीं वो।

"नहीं आंटी, मैं तो इसे जानता तक नहीं। सड़क पर अचानक से ये मेरी गाड़ी के सामने आ गई। गिर कर बेहोश हो गई तो मैं इसे घर ले आया।'' बिप्लव ने घबरा कर सफाई दी। अब तक वो युवती होश में आ चुकी थी। उसने सिर घुमा कर आस–पास के माहौल का मुआयना किया। कुछ कहने के प्रयास में जैसे उसके शब्द मुँह में गोल गोल घूम कर रह गए। पेट में पल रहे जीव का ध्यान आया और उसे लगा कि वो मरी नहीं, अभी जीवित है। रोई, सोई आँखों से वो उन लोगों को देखने लगी– "क्यों बचा लिया मुझे ? ये दुनिया इस लायक नहीं कि यहाँ कोई जिए। मेरा बच्चा भी इस दुनिया को न ही देखे तो अच्छा होगा।'' कपड़े सँभालते हुए वो उठी तो लड़खड़ा गई। मिसेज जोन्स ने उसे संभाल लिया। बिप्लव उसके लिए गर्म दूध ले कर आया। मिसेज जोन्स ने दूध का गिलास उसे थमाया तो वह चुप हो कर उन्हें टुकुर टुकुर देखने लगी। उसकी आँखें देख कर मिसेज जोन्स का जी कच्चा सा हो गया।

''पियो इसे,'' मिसेज जोन्स का आदेशात्मक स्वर सुन कर वो युवती कुछ संतुलित हुई।

''अब बताओ मुझे क्या बात है ?'' बड़े अधिकार से मिसेज जोन्स ने पूछा।

''मेरा नाम लीला है,'' उसने बताया तो मिसेज जोन्स

चौंक पड़ीं। लीला चुप थी। सोच रही थी– क्यों भागी थी घर से ? ब्याहता होने के बावजूद। पति बदसूरत था, प्रेमी जगमग सजीला जवान। पति के साथ सुरक्षा थी, हीरे सी काया वाले प्रेमी ने तो उसे बेचने की जुगत चला दी थी। लीला समझ गई थी कि उसने आँधी पर पाँव रखा था। बवंडर तो उसे झेलना ही पड़ेगा। सो गर्भवती होने के बावजूद वो हरिन्दर के घर से रातोरात भाग निकली। शायद आत्महत्या ही उसका लक्ष्य था तब।

"गॉड के दिए जीवन को मार देने का तुम्हें कोई राइट नहीं है, माई चाइल्ड।'' मिसेज जोन्स का ममता भरा स्वर उसके कानों में पड़ा।

''लेकिन मैं जाऊँगी कहाँ ? मेरा कोई घर नहीं है,'' लीला सुबकने लगी। बिप्लव और मिसेज जोन्स ने आँखों आँखों में कुछ बातें कर ली थीं।

"तुम हमारे साथ रह सकती हो, लिली।'' मिसेज जोन्स ने प्यार से उसे आश्वस्त किया।

"मेरा नाम लिली नहीं, लीला है।''

"तुम्हारा नाम कुछ भी हो, मैं तुम्हें लिली कह कर ही पुकारूँगी।'' मिसेज जोन्स की आँखों में बरसों पहले खोई लिली की यादों का समन्दर लहरा उठा था। लिली की आलमारी खोलते हुए उन्होंने उसकी छोटी छोटी चीजों को एक बार फिर से छू लिया। आज लिली जीवित होती तो शायद इतनी ही बड़ी होती– उन्होंने लीला के लिए सोचा।

गर्भकाल पूरा होने पर लीला ने एक सुन्दर, स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। हरी आँखें, गोरा चिट्टा रंग। मिसेज जोन्स ने चट से नाम धरा– ''लिली।''

"क्या आंटी, तुम्हें लिली के सिवाय कोई नाम नहीं सूझता ?" बिप्लव ने प्यार से झिड़का। लीला बस मुस्कराती रही।

समय कब रुका है किसी के लिए ? मिसेज जोन्स की उम्र ढलान पर थी। नन्ही लिली आहिस्ता आहिस्ता पाँच बरस की हो गई। अब लीला और बिप्लव, मिसेज जोन्स के लिए परिवार के सदस्य जैसे बन चुके थे। लीला की दिनचर्या लिली और मिसेज जोन्स के इर्दगिर्द ही घूमती थी। बहुत चुप रहती थी लीला। किसी को अपना अतीत नहीं बताया था उसने और न किसी ने जानना चाहा। इतने बरसों में कोई उसे ढूँढने, उससे मिलने नहीं आया था। बिप्लव और मिसेज जोन्स की जान थी लिली। बिप्लव को लीला अच्छी लगती थी लेकिन एक हिचक थी जो हर बार उसे कुछ भी कहने से रोक देती थी।

जीवन संध्या में मृत्यु शैया पर पड़ी मिसेज जोन्स के सिरहाने जब बिप्लव और लीला चिंतातुर एक साथ बैठे थे तब उन्होंने बिप्लव और लीला का हाथ अपने हाथ में लेकर क्षीण स्वर में कहा, "गॉड का बुलावा आने से पहले मैं चाहती हूँ कि तुम दोनों की मैरिज हो जाये।''

वे दोनों अचकचा गए। बिप्लव ने अपना हाथ हल्के से खींच लिया था। लीला स्तब्ध थी, चुप थी। उसकी पलकों की कोरों पर नमी थी। फिर वो उठ कर खिड़की के पास जा कर खड़ी हो गई। बिप्लव ठीक उसके पीछे था– "लीला, अगर आंटी को कुछ हो गया तो हम किस रिश्ते से यहाँ साथ रह सकेंगे ? क्या तुम मुझसे शादी करना चाहोगी ?''

"लेकिन आपको तो मेरे बारे में कुछ भी पता नहीं। फिर कैसे ...?''

"मुझे तुम्हारे बीते हुए कल से कोई मतलब नहीं लीला, मैं बस तुम्हारे साथ अपना आने वाला कल जीना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारा साथ और लिली जैसी बेटी चाहिए।''

लीला ने अनझिप आँखों से बिप्लव को देखा। उसकी आँखों का ढेर सारा अनुराग लीला सह नहीं पाई। स्वतः ही उसकी पलकें झुक गईं। अब इतने बरसों बाद कहीं कोई नहीं होगा जो उसकी प्रतीक्षा करता होगा– उसने सोचा।

"लीला, एक बात जो बस मैं ही जानता हूँ, तुम्हें बतानी है। बरसों पहले हुई एक दुर्घटना के कारण मेरी अपनी सन्तान नहीं हो सकती, कभी नहीं। क्या तुम मुझे मेरी बेटी देना चाहोगी ?'' बिप्लव की आँखों में याचना थी। पहली बार बिप्लव ने लीला को छुआ था। अपनेपन से भरा ये स्पर्श उसने महसूस किया। उसे लगा उसके जीवन के सारे कंटीले अनुभव कहीं खो गए हैं। बिप्लव का साथ पाकर उसके जीवन में अब केवल बसंत और सावन के दिन रात ही शेष रह जाएंगे। वो मुड़ कर मिसेज जोन्स के बेड के पास जाकर बैठ गई। मिसेज जोन्स की साँसें उखड़ने लगी थीं। बिप्लव ने घबरा कर डॉक्टर को फोन किया और मिसेज जोन्स को सँभालने लगा। मिसेज जोन्स उसकी बाहों का सहारा लेकर बैठ गईं। कठिनाई से उन्होंने आँखें खोलीं। लीला का हाथ बिप्लव के हाथ में थमाते हुए उनके शान्त चेहरे पर मुस्कराहट थी। एक स्नेहसिक्त चुम्बन उन जुड़े हुए हाथों पर उन्होंने धरा और फिर उनका सिर उसी मुद्रा में झुका रह गया। ◆

पता : फ्लैट नं–303, प्लाट नं 26/10, कुमार एन्क्लेव,
वजीर हसन रोड ,लखनऊ–226001
मो. : 9651769322

मेमोरी फुल

❑ प्रगति गुप्ता

बीते हुए तीन बरसों में सुशांत महसूस कर चुका था कि खामोशी कितनी भयानक हो सकती है। पहले घर उसे ऑफिस के काम जल्द खत्म कर वापस लौटने के लिए आमंत्रित करता था। अब उसी में फैला हुआ सन्नाटा अपराधबोध से घेरकर उसे भयभीत करने लगा था।

जब तक घर में माँ–बाबा थे, घर–घर सा लगता था, मगर अब...! माँ–बाबा ने जीवनपर्यंत मेहनत की। उसका पालन–पोषण कर अच्छे संस्कार दिए। जब उसके करने की बारी आई, दोनों ने ही एक–एक कर उसका साथ छोड़ दिया।

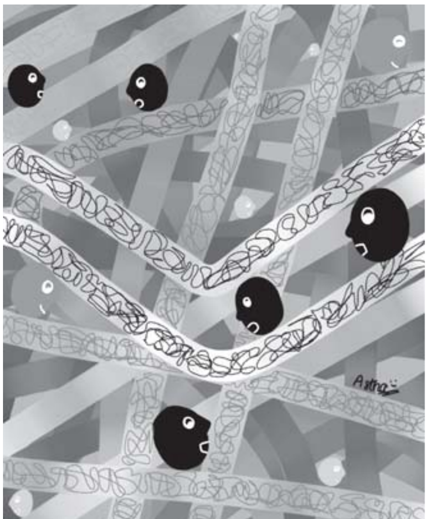

माँ कुछ समय ही बीमार रही। इलाज भी चला। एक रात माँ हमेशा के लिए चली गई। सुशांत ने माँ के साथ को इतना ही लिखा हुआ मानकर मन को समझाना शुरू कर दिया था। मगर बाबा....! सुशांत ने बाबा को कहाँ–कहाँ नहीं खोजा...! हर दिन सड़कों पर आते–जाते उसकी आँखें उन्हीं को खोजतीं। वह असंख्य चेहरों से अपने बाबा के चेहरे का मिलान करता–फिरता, मगर हताशा हाथ लगती। साँझ ढले वह उदास मन से घर में प्रविष्ट होता और अगली सवेरे पुनः नई उम्मीद खुद में जगाने की कोशिश करता– 'शायद कल कहीं बाबा दिख जाए और वह उनके साथ घर लौटे।' अक्सर उसकी नींद पूरी–पूरी रात बाबा के ख्यालों से उचटती रहती।

बाबा बिजलीघर में हेड क्लर्क थे। बहुत ईमानदारी से जीवन यापन करने वाले बाबा, सीधे–सादे सात्विक प्रवृत्ति के थे। कपटियों के रिश्वत या धाँधलेबाजी जैसे मंसूबों के बीच बहुत बार वह रोड़ा बने थे। झूठे आरोप लगाकर बेईमानों ने उनका मुँह बंद करने की कोशिश की थी। उनकी चालों से आहत बाबा ऐसे चुप हुए कि हरदम अपना मुँह छुपाते रहे। उनके रिटायरमेंट में कुछ समय शेष था। दुर्घटना के बाद वह कभी ऑफिस नहीं गए। न किसी से बात करना, न मिलना। बस बिस्तर पर पड़े रहना। माँ कहती थी–

"आप खुद को संभालिए। आप ऐसे कैसे जीवित रहेंगे! दुनिया बहुत चालाक और दगाबाज लोगों से भरी पड़ी है पर आपका परिवार आपको अच्छे से पहचानता है। पूरा खानदान

आपको मान–सम्मान देता है।... मन को स्वस्थ रखने की कोशिश करिए। चलिए, हम सब कहीं घूमने चलते हैं। इससे आपका मन भी बदली हो जाएगा।"

माँ की बातें सुनकर बाबा अपने बेटे की आँखों में ऐसे झाँकते, मानो अपने निरपराध होने के भावों की खोज कर रहे हों। सुशांत को नौकरी के घंटों के अलावा जब भी समय मिलता, उनके पास घंटों बैठता। उन्हें अपने साथ होने की सांत्वना देता, मगर बाबा हारे हुए आदमी की तरह हर बार ही सुबक पड़ते। सुशांत ने बहुत बार उन्हें वकील से मिलने के लिए भी कहा–

"बाबा! हम द्वारिका अंकल के पास चलते हैं। वह आपके बचपन के मित्र हैं। जैसा वह सुझाएंगे, हम कुछ एक्शन ले सकेंगे।"

सुशांत के बार–बार सुझाव देने पर बाबा पहली और आखिरी बार चंद पंक्तियाँ बोले, जिन पर मन की पीड़ाओं ने कंपन का वजन रख दिया था–

"बेटा! अभी तो एक दिन ही समाचारपत्र में खबर आने के बाद सब ठंडा पड़ गया है। वकील करने के बाद हर दिन अखबारों की सुर्खियों में मेरी चर्चा होगी। कितनी बार तेरा बाप मरेगा! कुछ समय बाद लोग शायद इस खबर को भूल जाएं! तेरी नई–नई नौकरी है। सोच कर देख उस पर भी असर पड़ेगा। किस–किस को सफाई देगा! लोगों को बातें बनाने के लिए झूठे मुद्दे ही चाहिए। सारी उम्र सम्मान के साथ नौकरी की है। अब अपनी मिट्टी पलीत होते देखना मेरे बस में नहीं है। ऐसा होने से पहले मैं मर जाऊँ, वही अच्छा है।"

बाबा के चोटिल मन की पीड़ा ने सुशांत को भीतर तक सिहरा दिया था। ईमानदार आदमी की पीड़ा बहुत गहरी होती है। बाबा अपने अवसाद से निकल नहीं पा रहे थे। कुछ बरस यूँ ही निकल गए। सुशांत उन्हें जिद करके पारिवारिक चिकित्सक के पास लेकर गया। उनकी दवाइयाँ शुरू हो गईं। अचानक माँ की तबीयत बिगड़ने लगी। अब माँ के लिए भी चिकित्सकों के यहाँ उसके चक्कर लगने शुरू हो गए थे। वह नौकरी के अनियमित घंटों के साथ चिकित्सकों के समय का तारतम्य बैठाने की कोशिश कर रहा था। उसके जीवन का यह सबसे कठिन समय था। सब तेजी से घट रहा था।

चिकित्सकों ने माँ की अकस्मात मृत्यु का कारण हृदयाघात बताया था। माँ के लिए बाबा का सदमा हृदयाघात का कारण बना या उनका अपनी बीमारियों की हरदम उपेक्षा करना, सुशांत के लिए फिलहाल विश्लेषण करना मुश्किल था। बाबा दो–दो आघात झेल नहीं सके। वह एकदम पत्थर हो गए।

सुशांत को सभी व्यवस्थाएं बिठाने में समय लग रहा था। उसने एक मिसरानी भी रख ली, जो अतिरिक्त मदद कर देती थी। उसके आने के बाद सुशांत के मन में थोड़ी निश्चिंतता आ गई थी। वह खाना बनाने के अलावा बाबा को थाली परोसकर भी दे जाती थी।

बाबा ने उससे कभी अपने पसंद का खाना बनाने को नहीं कहा। सुशांत ने उन्हें कभी शांति से खाना खाते हुए भी नहीं देखा। उन्हें जल्द से जल्द खाना खत्म कर प्लेट हटाने की जल्दी रहती। अवसादित होने के बाद माँ जब खाना परोसती, बाबा बुदबुदाते थे–

"देवकी! इच्छा नहीं होती कुछ भी खाने की। इतनी मेहनत मत किया करो।"

माँ उन्हें सामान्य करने की कोशिश करती रहती थी। उनका मन बदली करने के लिए बीच–बीच में रिश्तेदारों से बात करवाने की कोशिश करती। वह हाँ या न में अपनी बात खत्म कर जल्द ही फोन माँ को पकड़ा देते। खुद करवट बदल कर लेट जाते।

माँ के होने से सुशांत को निश्चिंतता थी, मगर माँ के जाने के बाद... सब तरफ शून्य बिखरने लगा था। सुशांत जितना संभालने की कोशिश करता, उसके हाथ असफलता लगती। नौकरी के घंटों में भी वह बाबा के ख्याल से मुक्त नहीं हो पता था। एक दिन अचानक संध्या के समय मिसरानी का फोन आया–

"भैया! खाना बन चुका है। घर में बाबा को सब तरफ खोज लिया, मगर वे मिल नहीं रहे हैं! जब आई थी, मुझे दिखाई नहीं दिए थे। सोचा बाथरूम में होंगे। दोपहर को उन्हें खाना देकर गई थी, मगर अब वह कहाँ हैं? मेरा जी बहुत घबरा रहा है। आप जल्दी से घर आ जाओ।"

फोन आते ही सुशांत के पैरों तले मानो जमीन ही

खिसक गई। घर की एक चाबी सुशांत और दूसरी नौकरानी के पास रहती थी। जब घबराहट में गाड़ी की चाबी लगाकर स्टार्ट करने में सुशांत के हाथ काँपने लगे, उसने अपने मित्र संजीव को साथ चलने के लिए कहा–

"संजीव! बाबा घर से न जाने कहाँ निकल गए हैं। यार मुझसे गाड़ी ड्राइव नहीं हो पाएगी, तुझे चलानी पड़ेगी। मन में अजीब–सी घबराहट शुरू हो गई है।"

संजीव रास्ते भर उसे ढाँढस बंधाता रहा कि– 'बाबा आस–पास किसी पड़ोसी के यहाँ होंगे... आ जाएंगे।'

संजीव की बातें सुशांत के सिर के ऊपर से गुजर रहीं थीं। वह भली–भांति जानता था कि बाबा को अवसाद के अलावा डिमेंशिया भी हो गया है। वह जल्द से जल्द घर पहुँच कर प्रवेश द्वार पर लगाए हुए कैमरे की रिकॉर्डिंग खोलकर देखना चाहता था, ताकि वह अनुमान लगा सके कि बाबा कितनी दूर गए होंगे?

जब संजीव ने उसे परेशान देखा, अपनी बात को पुनः दोहराया। सुशांत पलांश अपराधबोध से सुबकते हुए बोला–

"बाबा ने ऑफिस छूटने के बाद सब जगह जाना बंद कर दिया था संजीव! वह किसी से भी मिलने नहीं गए होंगे। फिर कहाँ? संजीव पिछले 15–20 दिनों से बाबा की हालत ठीक नहीं थी। उनका डिमेंशिया बढ़ रहा था। मैंने चिकित्सक से कल का अपॉइंटमेंट ले रखा था।"

सुशांत के एकदम चुप हो जाने पर संजीव ने चिंतित होकर पूछा–

"अंकलजी की तबीयत खराब है, यह तुमने बताया था। इतनी अधिक खराब है, क्यों नहीं बताया! हम मिलकर कुछ समाधान निकालते।"

"बाबा पर जब झूठे आरोप लगे, उन्होंने ऑफिस में अपने मेडिकल के साथ जल्दी रिटायरमेंट की अर्जी लगा दी थी। कुछ समय बाद बाबा की पेंशन भी आना शुरू हो गई थी, मगर उन्होंने कभी एक रुपया भी बैंक से नहीं निकाला। उन्होंने बैंक से लोन लेकर घर पहले ही बना लिया था। जब इच्छाएं ही मरने लगे, तब उत्साह भी खत्म होने लगता है। जब तक माँ थी, बहुत कुछ संभला हुआ था। बाद में बाबा घंटों शून्य में ताकते रहते थे।

सुशांत असमंजस में था। वह बस प्रवाह में बोलता जा रहा था–

"यार! कुछ पीड़ाएं जिनमें घर–परिवार की इज्जत छिपी हुई होती है, उन्हें साझा करना आसान नहीं होता ।... मैं अपने स्तर पर सब संभालने की कोशिश कर रहा था। बहुधा बाबा वॉशरूम जाने के लिए उसका दरवाजा खोलकर देर तक बाहर खड़े रहते। कुछ सोचते रहते, शायद भूल जाते होंगे यहाँ क्यों आए थे? अंदर चले जाते तो देर तक बाहर नहीं निकलते। जब मैं आवाज लगाता, चुपचाप निकल आते। अक्सर मुझे ही पूछना पड़ता कि आपने हाथ वॉश कर लिए? ब्रश कर लिया या नहीं? हमारे बीच बातचीत बहुत कम हो गई थी। वह जवाब बहुत कम देते थे। मैं ही उन्हें बहला कर वापस वॉशरूम में ले जाता, उनके हाथ या पॉटी वॉश करवाता। उन्हें अपने ऑफिस आने से पहले नहलाकर साफ कपड़े पहनाकर निकलता।"

जैसे ही संजीव ने सुशांत के कंधे पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दी, वह रो पड़ा–

"संजीव! मेरे बाबा बहुत मेहनती और ईमानदार व्यक्ति रहे हैं। उन्होंने मुझे अच्छी शिक्षा व दीक्षा दी। हरदम सकारात्मक रहने वाले बाबा का ऐसे गुम हो जाना...! मेरा जी बहुत घबरा रहा है। यार! बाबा मिल जाएंगे न?"

सुशांत और संजीव अच्छे मित्र थे। उन्होंने आगरा की एक बड़ी प्राइवेट कंस्ट्रक्शन कंपनी में एक साथ नौकरी ज्वाइन की थी। अधिकांशतः दोनों शहर या शहर के बाहर साइट विजिट करने के लिए एक साथ जाते थे। साथ उठने–बैठने से एक दूसरे के परिवारों से परिचित थे। सुशांत मित्र के सामने अब बह रहा था–

"बाबा पर जब झूठे आरोप लगे, उन्होंने ऑफिस में अपने मेडिकल के साथ जल्दी रिटायरमेंट की अर्जी लगा दी थी। कुछ समय बाद बाबा की पेंशन भी आना शुरू हो गई

थी, मगर उन्होंने कभी एक रुपया भी बैंक से नहीं निकाला। उन्होंने बैंक से लोन लेकर घर पहले ही बना लिया था। जब इच्छाएं ही मरने लगे, तब उत्साह भी खत्म होने लगता है। जब तक माँ थी, बहुत कुछ संभला हुआ था। बाद में बाबा घंटों शून्य में ताकते रहते थे।

मैं कभी उनके लिए टी.वी. ऑन कर देता तो वह चुपचाप से उठकर उसे बंद कर देते। तीन दिन पहले की ही बात थी, उन्होंने अपने बालों में तेल लगाने के लिए शीशी निकाली थी। तेल हाथ में लेकर बालों में लगाने की बजाय, शीशी का पूरा तेल ही सिर पर उड़ेल लिया था। उस समय मैं सवेरे का नाश्ता लगा रहा था। जैसे ही मेरी नजर बाबा पर पड़ी, तब तक तेल सिर से होता हुआ जमीन तक पहुँच चुका था। गलती थी मेरी। सभी व्यवस्थाएं संभालते–संभालते उस दिन पहली बार मैं बाबा से तेज आवाज में बोला था–

"बाबा! यह क्या किया आपने? वहीं पर ठहरिएगा! हिलिएगा नहीं। जमीन पर भी तेल फैल गया होगा, आप फिसल जाएँगे।"

मेरी आवाज सुनकर बाबा ने जिस तरह सहमकर मुझे देखा, वह सामान्य नहीं था। बाबा भ्रम की स्थिति में थे। डिमेंशिया का उनके दिमाग पर कुछ अधिक असर आ गया था। कभी वह बुदबुदाते, पिछली स्मृतियों को ही दोहराते। अक्सर नाम भूल जाते। उसके साथ भी अजनबियों की तरह व्यवहार करते। कभी–कभी लगता कि बहुत अधिक सोचने से उनकी मेमोरी फुल हो गई है।

वृद्धावस्था में ऐसी स्थिति किसी की भी हो सकती थी। वर्तमान की बातें याद रखना उनके लिए मुश्किल हो गया था। कभी लगता, बाबा वर्तमान को याद ही नहीं रखना चाहते। उनका व्यवहार अप्रत्याशित होता जा रहा था। इस घटना के बाद जिस चिकित्सक से उनका इलाज चल रहा था, बात की। उसने कल बुलाया था, मगर आज...।"

संजीव को संक्षिप्त में सब बताकर सुशांत पुनः सोच में डूब गया। माँ की मृत्यु के समय आए हुए रिश्तेदारों ने जरूरत पर बुलावा भेजने की सांत्वना दी थी। सुशांत ने कुछ समय पहले ही मौसी और चाचा को बारी–बारी आने का बोल दिया था। जिनके लिए उन्हें बुलाया था, फिलहाल वही कहीं खो गए थे। जैसे ही सुशांत घर के दरवाजे पर पहुँचा, उसका इंतजार करती हुई मिसरानी ने कहा–

"भैया! मैं बाबा के बारे में आसपास के सभी घरों और दुकानों में पूछ कर आई हूँ। बाबा को किसी ने बाहर जाते हुए नहीं देखा। वैसे भी आप जानते ही हो भैया, अब कौन किसका ध्यान रखता है। किसको दूसरों की चिंता करने का शौक है? यह सब पुराने समय की बातें थीं, लोग पास–पड़ोसियों का अपनों के जैसे ख्याल रखते थे। आजकल धूप भी बहुत तेज है, कोई अपने घर के बाहर नहीं बैठता। यहाँ किसी को कुछ नहीं पता है।"

सुशांत ने मिसरानी की बात सुनकर उसे अपने घर जाने को कह दिया। उसने संजीव के साथ मिलकर कैमरे की दिनभर की रिकॉर्डिंग्स चेक कीं। उसने बाबा को तीन बजे के आसपास घर से खाली हाथ निकलते हुए देखा। सुशांत को तनिक तसल्ली हुई कि बाबा घर से दोपहर का खाना खाकर निकले हैं। उसकी मन को दी गई तसल्ली बहुत देर तक न ठहर सकी। अब तो उनके रात के खाने का समय भी निकल चुका था।

अपने विचारों पर विराम देकर सुशांत ने आसपास के शहरों में रहने वाले कुछ रिश्तेदारों को फोन करके बाबा के बारे में सूचना दी, ताकि सभी चौकन्ने रहें। उसने पुलिस थाने में भी रिपोर्ट दर्ज करवा दी।

इसके बाद सुशांत की अंतहीन खोज शुरू हुई। जितना उसका अपराधबोध गहराता जाता, खौफ और पीड़ा की तीव्रता उतनी ही घनी हो जाती। घर का खालीपन उसे डराने लगा था। जिस घर में माँ–बाबा के अथाह प्रेम के साथ उसने समय गुजरता था, वहीं पसरा हुआ सन्नाटा उसे बेचैनी से भर गया था।

वह नौकरी के घंटों में भी अवसर मिलते ही घर के चक्कर लगाने लगा था।... उसे हर समय बाबा के लौटने की प्रतीक्षा रहती। दरवाजे की हर घंटी या दस्तक में बाबा को देखने की चाहत थी। बाबा का विदा लेना, माँ के विदा लेने से अधिक डराने वाला था। उसकी कुछ धड़कनें टूट–सी गई थीं। सुशांत हर दिन स्वयं से वादा करता–

'अबकी बार बाबा के लिए और अधिक सुविधाएं बढ़ाने की कोशिश करेगा। उन्हें पल भर के लिए भी अकेला नहीं छोड़ेगा। बस बाबा एक बार वापस लौट आएं।'

सुशांत ने पड़ोसियों से आग्रह कर लिया था कि कहीं

भी कोई सूचना मिले, उसे तुरंत फोन करें। इस दुर्घटना के बाद सुशांत ने ऑफिस में बैठकर काम करने की बजाय, फील्ड वर्क करना ही स्वीकार लिया था। भरी धूप हो या सर्दी, वह अपनी कंपनी की सभी साइट्स पर खुद ही विजिट करता। मौका मिलते ही आसपास के छोटे–बड़े अस्पतालों, ढाबों और रेस्टोरेंट में बाबा को खोजता। धीरे–धीरे करके तीन बरस गुजर गए थे, मगर बाबा का कोई सुराग नहीं मिला था। हर फोन की घंटी पर मन में उम्मीद सी जगती, मगर जल्द ही टूट जाती।

कंपनी के किसी बड़े प्रोजेक्ट के लिए सुशांत को ग्वालियर के पास एक साइट विजिट के लिए भेजा गया, संजीव उसके साथ ही था। साइट विजिट के बाद दोनों ने एक ढाबे में दोपहर का खाना खाने का निश्चय किया। खाना खाकर सुशांत ढाबे के पीछे बने अहाते में बने वॉशरूम में जब हाथ धोने गया, अचानक उसकी दृष्टि दूर बैठे एक अधेड़ पर पड़ी। जो लगातार बर्तन धोने में जुटा था। सुशांत उन्हें एकटक देखता रहा। अचानक उसकी दृष्टि अधेड़ की एक क्रिया पर भी पड़ी, जो उसके बाबा से मिलती–जुलती थी।

अवसादित बाबा शून्य की स्थिति में बार–बार सिर झटकने लगे थे, मानो वह अपने सिर पर लदे हुए विचारों को उतार कर फेंक देना चाहते हों। सुशांत के पैर मानो जहाँ के तहाँ ही जम गए। अकस्मात उसका मन उन बातों की ओर दौड़ गया, जो चाचाजी ने उससे कही थी–

'सुशांत! हिम्मत रखना बेटा। भाई साहिब कहीं न कहीं मिल जाएंगे। पूरा परिवार सचेत रहेगा। पुलिस भी उन्हें ढूंढेंगी। हम सबको अपने–अपने स्तर पर उनकी खोज जारी रखनी होगी।' चाचाजी ने ही बताया था कि–

'बेटा! छोटे–छोटे कस्बों और गाँवों में होटल या ढाबे वाले मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों को दलालों से खरीद लेते हैं। इनके गुर्गे ऐसे लोगों की तलाश में रहते हैं, ताकि उन्हें बंधक बना काम करवा सकें। बहुधा ऐसे लोग इन्हें ड्रग्स देकर साफ–सफाई और बर्तन धोने जैसे कामों को करवाते हैं। बदले में उनके खाने–पीने और सोने की व्यवस्था कर देते हैं। जितने दिन रोगी टिकता है, उनका मुफ्त में काम निकल जाता है।"

अकस्मात सुशांत हकबकाया–सा अधेड़ को घूरने लगा। सुशांत जब वापस नहीं लौटा, संजीव के साथ–साथ होटल का एक कारिंदा वहाँ पहुँच कर बोला–

"क्या है भाई! यहाँ क्यों खड़े हो? कभी बर्तन माँजते हुए आदमी को नहीं देखा क्या?"

अभी दोनों लौटने का सोच ही रहे थे कि अचानक वही कारिंदा अधेड़ की ओर देखकर तेज आवाज में बोला–

"तेज–तेज हाथ चला बुढ़ऊ! कस्टमर बढ़ रहे हैं। सेठ ने मुझे तेरे पास भेजा है। देख कर आ... बुढ़ऊ सो तो नहीं गया! साला...जब से आया है, इस हरामी का...एक शब्द मुँह से नहीं फूटा।"

कारिंदे की बात सुनकर सुशांत भीतर तक हिल गया। उसने जैसे ही उसकी अंतिम पंक्तियाँ सुनी उसने संजीव का हाथ कसकर पकड़ उसे वहीं रुके रहने का इशारा किया। उसकी छठी इंद्री का संकेत गहरा था। वे दोनों अधेड़ के निकट पहुँच गए।

अचानक सुशांत की आँखें भर आईं। पसीने से लथपथ बढ़े हुए बालों और दाढ़ी वाले उस अधेड़ की आँखों से एकाएक आँसुओं की पतली–सी धार बह चली। सुशांत को चोटिल–सी पुकार सुनाई दी–

"बेटा सुशांत! घर का पता भूल गया हूँ।... तुम आ गए बेटा!"

अब सुशांत फफक कर रो पड़ा। जिस बाबा को माँ ने राजा बनाकर रखा था, संवेदनहीन बाजार उन्हें वस्तु बनाकर उपभोग कर रहा था। उनकी मानसिक दशा का फायदा कुटिल व्यापारी उठा चुके थे।

फिलहाल सुशांत ने रोते हुए अपने बाबा का हाथ पकड़कर चूम लिया। वह बाबा का पहचान पत्र और कुछ जरूरी कागज अपने साथ ही रखने लगा था। ढाबा मालिक के चंगुल से बाबा को छुड़ा लेने के बाद, उसके भीतर एक सुकून पसर गया था। वहीं उसे भविष्य के लिए और अधिक सचेत भी कर गया। उन्हें साथ लेकर घर लौटते समय सुशांत को अपनी चाल कुछ अधिक हल्की महसूस हो रही थी। ◆

पता : 58, सरदार क्लब, स्कीम, जोधपुर–342011

मो. : 9460248348, 7425834878

सजा

❑ भारती मिश्रा

''क्या हुआ जी... लड़के वालों ने क्या! क्या कुछ बात बनी?'' पत्नी की बात सुनकर किशोरी बाबू कहते हैं, ''बात क्या खाक बनेगी! फिर से लड़के वालों का इनकार। अगर लड़की दिखाकर शादी करने की सोचेंगे तो अब कुछ नहीं होने वाला। हमें कोई दूसरा उपाय सोचना होगा।''

''दूसरा उपाय!''

''हां... वृंदा के बदले हम अपने छोटे भाई श्याम बिहारी की लड़की शोभा को दिखा देते हैं। वह तो है ही सुंदर, लड़के वाले पसंद कर लेंगे और फिर हम शादी वृंदा की कर देंगे,''

''लेकिन यह तो धोखा होगा।''

किशोरी जी पत्नी को डपटते हुए कहते हैं, ''धोखा होगा तो हो, अपनी बेटी को सारी जिंदगी घर में कुंवारी नहीं बैठा सकते। गांव वाले क्या कहेंगे!''

किशोरी जी अपनी बात पर अडिग रहते हैं। वृंदा गांव के स्कूल से दसवीं पास कर गई थी। किशोरी बाबू उसके विवाह के लिए रिश्ते खोजने लगे थे, लेकिन उसके चेहरे और बदन पर जहां–तहां सफेद दाग होने के कारण लड़के वाले उसे देखते ही मना कर देते।

किशोरी बाबू ने एक लड़के वाले से फिर बात चलायी। वे लड़की देखने को तैयार हो गए। लड़का एक छोटी सी कपड़े की दुकान चलाता था। लड़की दिखाने में किशोरी बाबू ने अपने छोटे भाई श्याम बिहारी की बेटी शोभा को दिखाया। लोगों को लड़की पसंद आ गयी। शोभा सातवीं पास थी। शोभा को पसंद करके लड़के वालों ने शादी की तारीख भी तय कर दी, लेकिन मनोज के साथ वृंदा की शादी करा दी गयी।

किशोरी बाबू ने पहले से ही वरमाला के लिए मना कर दिया था कि हमारे गांव में यह सब शहरी रिवाज नहीं चलता। दूसरे, पार्लर वाले को बुलाकर उन लोगों ने वृंदा को बहुत अच्छे से मेकअप करवा दिया था। गहनों और मेकअप से लदी वृंदा हल्के घूंघट में थी, इसलिए शादी में किसी को कुछ पता नहीं चला।

वृंदा विदा होकर ससुराल आ जाती है। यहाँ उसको देखकर सभी चकित हो जाते हैं। घर में हाय—तौबा मच जाती है कि किशोरी बाबू ने कितना बड़ा धोखा किया है। शादी में जुटे सभी लोगों के मुँह से वृंदा के लिए अपशब्द निकल रहे थे। ससुराल में उसे कोई भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। मनोज तो ऐसा महसूस कर रहा था कि मानो वह आसमान में उड़ते हुए एकदम से धराशायी हो गया हो। सारे दोस्त जो तरह—तरह की बातें करके छेड़ रहे थे, वे सभी एकदम से शांत हो गए। लोगों को मालूम हो चुका था कि मनोज के साथ शादी के नाम पर धोखा हुआ है।

''हाय... हाय... किशोरी बाबू ने हमारे साथ कितना बड़ा धोखा किया! दिखाया किसको और ब्याह कर भेज दिया इस दाग धब्बे वाली को। देखो इसके हाथ ध्यान से जहां—तहां सफेद दाग की झलक मिल रही है,'' मनोज की मां अपना गुस्सा जाहिर करती है।

उसके गुस्से में रिश्तेदार की महिलाएँ भी शामिल हो गयीं, ''हमारे मनोज बेटा का तो भाग्य ही फूट गया। किसी को उम्मीद भी नहीं थी की समधी साहब ऐसी साजिश रचेंगे।''

''अब क्या करें! आखिर खुली आँख से जहर कैसे निगलें? बुलाओ बहुरिया के बापू को और भेज दो इसे वापस। हम मनोज की जिंदगी यूं बर्बाद ना करेंगे।''

तभी मनोज के पिता बोलते हैं, ''ठहरो...ठहरो... यूँ तुरंत में आसमान सर पर मत उठाओ। पहले दुल्हन को घर में आराम से बिठाओ, उसके बाद आगे का सोचते हैं।''

पूरे घर में शादी वाला उत्सव उदासीनता में बदल गया। इधर—उधर सारे लोग कानाफूसी में व्यस्त थे। कोई कुछ कहता, कोई कुछ सुनाता। इसी बीच वृंदा के पिता को बुलाया गया। किशोरी बाबू को अंदेशा हो चुका था कि कोई बात है सो उन्हें बुलावा आया है।''

किशोरी बाबू समधी साहब को अभिवादन करते हैं परंतु वो इसका प्रत्युत्तर नहीं देते। तभी मनोज की मां बोल पड़ती है, ''खूब चालाक निकले समधी साहब! हमारे बेटे का जीवन बर्बाद कर दिया आपने। आपकी धोखेबाजी ने समाज में हमें मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा।''

''ऐसा नहीं बोलिए समधन जी। एक बेटी का पिता मजबूरियों के बोझ तले दबा था। आप हमारी तकलीफ को समझिए।''

किशोरी बाबू की बात सुनकर मनोज के पिता बोलते हैं, ''अच्छा... यह भी खूब कहा आपने! हमारे परिवार को तकलीफ, बेइज्जती, बदनामी सब देकर उम्मीद लगाए बैठे हैं कि हम आपकी तकलीफ समझें। अभी अपनी बेटी को लेकर जाइए. हम यह रिश्ता तोड़ते हैं।''

''नहीं...नहीं... समधी जी, आप ऐसे रिश्ता मत तोड़िए। मेरी बेटी को स्वीकार करके आप पुण्य का भागी बनेंगे।''

''अब पाप—पुण्य की पट्टी मत पढ़ाइए। हमें आपसे कोई रिश्ता नहीं रखना, ले जाइए बेटी को।''

''समधी साहब... थोड़ा शांत मन से सोचिए। मेरी बेटी गुणी है मगर फिर भी इसकी शादी नहीं हो पा रही थी। थक—हार कर मुझे ऐसा व्यवहार करना पड़ा। कृपया इसकी सजा मेरी बेटी को मत दीजिए। अब यह आपके घर की बहू है। इसे यहां से नहीं ले जाऊँगा।''

इस प्रकार का कहकर किशोरी बाबू वहां से चल देते हैं। वह मन में सोचते हैं कि जब सबका गुस्सा ठंडा हो जाएगा, तब धीरे—धीरे मेरी वृंदा को ससुराल वाले स्वीकार कर ही लेंगे।

इधर वृंदा पिता के इस व्यवहार से टूट सी गयी। उसने कभी मन में यह नहीं सोचा था कि इतनी जल्दी उसका मायका पराया हो जाएगा। न पति अपना रहा, न ससुराल वाले, उधर मायका भी छूट गया।

''आह...! क्या रिश्ते एक झटके में टूट जाते हैं! बनने में तो कितना स्नेह और समर्पण खर्च होता है न। टूटने में बस एक अस्वीकृति ! मेरे पिता ने वापस ले जाने से इनकार कर दिया और मनोज ने पत्नी मानने से तो ससुराल वालों ने बहु मानने से।''

वृंदा व्यथित मन से यह सब सोचने लगती है। उसका मन एक बार करता है कि यहां से तुरंत चली जाए, लेकिन अगले ही पल वह सोचती है कि वह क्यों चली जाए! वह खुद चलकर तो नहीं आयी! वैसे भी निकलकर जाएगी कहां! रास्ते पर वह क्यों भटके, जब उसकी कोई गलती ही नहीं।

वृंदा के ससुराल में बड़े बुजुर्गों ने सलाह दिया कि अभी तुरंत शांति बनाए रखना ही सही है। आंधी—तूफान के माहौल को सामान्य हो जाने पर सोचते हैं कि आगे क्या करना है।

बुजुर्गों की बात मानकर लोग कुछ स्थिर हुए, लेकिन

वृंदा से कोई न कुछ बोलता नहीं अच्छी नजर से देखता। नयी दुल्हन का यूँ स्वागत! वृंदा ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा। ईश्वर से वह इस आघात को सहन करने की शक्ति मांग रही थी।

करीब हफ्ता भर ऐसे ही बीत गया। एक दिन अचानक मनोज और शोभा (वृंदा के चाचा श्याम बिहारी की लड़की) गले में वरमाला पहने घर में प्रवेश करते हैं। इधर वृंदा की सास उन दोनों का आरती की थाल से स्वागत करती है। वृंदा यह देखकर अचंभित हो गयी। शोभा की मांग में सजा लाल सिंदूर उसकी व्याहता होने की स्पष्ट गवाही दे रहा था।

''तो क्या... शोभा अब उसकी बहन नहीं, सौतन बन गयी! मैं मूढ़ इस शांति के पीछे के दूसरे आने वाले तूफान को तनिक न समझ पायी, लेकिन क्या इस शादी में सबकी रजामंदी...!''

वृंदा डबडबाई आंखों से उन दोनों को देख रही थी कि उसकी सास की आवाज़ गूंजती है, ''ऐसे देखकर इस जोड़ी को नजर न लगा। वैसे भी हमने मनोज के लिए इसी लड़की को तो देखा था और पसंद भी किया था। तुम्हारे चाचा ने अपनी बेटी मनोज से ब्याह दी। हमने एक रुपया दान–दहेज नहीं लिया है। तू अपना मुंह बंद रखेगी तो तुझे यहां से नहीं हटाएंगे। तुम दोनों बहनें हो, तो जैसे मायके में साथ हंसते–खेलते रही हो, वैसे यहां भी रहो।''

यह सब देखकर वृंदा का दिल जार–जार रो रहा था। वह मन ही मन सोच रही थी कि उसके पिता को जानकारी न हुई कि चाचा और शोभा क्या कर रहे हैं या सब जानते हुए भी वह चुप्पी साध लिए। मेरी गृहस्थी तो बसने के पहले ही उजड़ गयी। मन के वीराने में किसकी तस्वीर रखूं, किसे अपना कहूं!''

वृंदा अपने आंसू पोछते हुए मन में निश्चय करती है, ''अब मैं मायके नहीं जाऊंगी। जब मेरे पिता ने मेरी जिंदगी को शादी तक सीमित रखा और आज मैं इस स्थिति में जीने को मजबूर हो रही हूं तो फिर अब मायके से कोई रिश्ता नहीं।''

ससुराल में वृंदा खुद को सेट करने की कोशिश में समझौता करने लगी, लेकिन मन का टीस बीच–बीच में जोर जरूर पकड़ता। जब वह अपनी बहन को सौत के रूप में मनोज के साथ देखती तो उसकी आत्मा कराह उठती कि जिस सेज पर उसके सपनों के फूल सजने वाले थे उस पर शोभा का तन अंगड़ाइयाँ ले रहा है।

समय बीतता है। शोभा गर्भवती हो जाती है। घर में सभी खुश थे। वृंदा सारा समय घर के कामों में पिसती रहती है, वहीं शोभा को मनोज अपने आसपास रखने की हर संभव कोशिश करता रहता।

एक सुबह...''शोभा आज मेरा मन काम पर जाने का बिल्कुल नहीं कर रहा। जी तो चाहता है कि पूरा समय तुम्हें पास बिठाकर निहारता रहूँ।''

''बात तो ऐसे कर रहे हो जैसे हमारी शादी कल ही हुई है।''

''अभी हमारी शादी बहुत पुरानी भी तो नहीं है। सच जबसे तुम गर्भवती हुई हो ना तुम्हारा सौंदर्य और भी बढ़ गया है। यह निखरा–खिला चेहरा नजर से हटाने का मन ही नहीं करता।''

तभी दरवाजे पर वृंदा दस्तक देती है, ''नाश्ता तैयार हो गया है, मनोज के लिए टिफिन भी पैक कर दूँ?''

वृंदा को देखकर शोभा उखड़ जाती है, ''यह क्या दीदी, ऐसे पति–पत्नी के कमरे में अचानक आ धमकना सही है?''

''पति–पत्नी! आह... भला मैं कैसे समझ सकती हूं यह सही गलत का फेर।'' मन में सोचते हुए वृंदा बिना कोई जवाब दिए किचेन की तरफ लौट जाती है।

तभी वृंदा की सास शोभा के कमरे में आती है, ''इस वृंदा से जरा दूरी बनाकर रखो। तुम पेट से हो, कहीं जलन में आकर बच्चे को नुकसान पहुंचाने की कोशिश न करे। मैं तो कहती हूं कि तुम खुद से ही अपना खाना निकाल कर खाया करो नहीं तो तुम्हारे खाने में कोई राख–भभूत मिला देगी तो लेने के देने पड़ जाएंगे।''

शोभा सास की बात मानकर वृंदा से और भी दूर–दूर रहने लगती है। अब उसके अंदर बहन के बदले सौत का भाव हावी हो रहा था। उसकी पूरी कोशिश होती है कि वह मनोज के लिए भी सारे काम खुद ही करे ताकि वृंदा मनोज के आसपास भी ना दिखे।''

शोभा की डिलीवरी का समय नजदीक आ गया था। एक सुबह प्रसव पीड़ा होने पर उसे डॉक्टर के क्लीनिक में एडमिट करवाया गया। शोभा ने एक पुत्री को जन्म दिया।

बच्ची की किलकारियाँ घर में गूंजने से अलग ही रौनक बन गई थी। बच्ची के जन्म के बाद घर में छठीहार मनाया गया। छठी होने के बाद अच्छा दिन देखकर शोभा का बच्ची के साथ कुछ दिनों के लिए मायके भेज दिया गया। वहां शोभा मां बनने के बाद पहली बार गई थी वह भी एक तरह से पग फेरे का रस्म निभाने।

हफ्ते भर के बाद मनोज शोभा को वापस लाने के लिए तैयार हुआ तो उसकी मां ने मना कर दिया, अरे... अभी–अभी प्रसव पीड़ा से गुजरी है। बच्चे को जन्म देने के बाद महिला का शरीर कमजोर हो जाता है। रहने दे बहू को कुछ दिन मायके में, शरीर को आराम मिलने के साथ उसका जी भी बहल जाएगा। बहू को तो फिर यहीं आकर रहना है।''

मनोज अपने काम में व्यस्त हो जाता है। शोभा के न रहने से वह घर में बहुत कम रहता है। ज्यादातर काम को लेकर बाहर ही रहता, ऐसे में उसके खाने–पीने, सोने–जागने का भी रूटीन नहीं था। अधिक व्यस्तता के कारण मनोज को तेज बुखार हो गया।

''देखूँ जरा... तेरा चेहरा यूँ तमतमाया सा क्यों लग रहा है! अरे तुम्हें तो तेज बुखार है। कहती थी कि बेटा इतना काम मत कर। वृंदा... आकर मेरे बेटे को पानी की पट्टी दे मैं डॉक्टर साहब को बुलाकर लाती हूं।''

मनोज की मां बेटे का ललाट छूकर देखती है और फिर वृंदा को निर्देश देकर पास के डॉक्टर को बुलाने के लिए चली जाती है।

मनोज कमरे में लेटा बुखार से तप रहा था। वृंदा उसे पानी की पट्टियाँ दे रही थी। तब तक माँ डॉक्टर को लेकर आ गयी। डॉक्टर साहब मनोज को देखते हैं और कुछ दवाइयाँ देने के साथ उसे कुछ दिन तक आराम करने का निर्देश भी देते हैं। बताते हैं कि बुखार दो–तीन दिन में ठीक हो जाएगा। मनोज की माँ वृंदा को मनोज की देखभाल अच्छी तरह से करने की हिदायत देती है।

अब वृंदा घर के काम के साथ पति सेवा में भी लग गयी। हालांकि वह कभी पति के स्वरूप और सुख को करीब से नहीं जी पाई थी।

रात का समय था। किचेन के काम निपटाने के बाद वृंदा मनोज के कमरे में चली आई। उसे दवाइयाँ देने का समय हो गया था, लेकिन मनोज की आंख लग गई थी तो वह तुरंत जगाना मुनासिब नहीं समझी। बदन छूकर देखा तो हल्का बुखार अभी भी था उसने सोचा तलवे रगड़ दूं ताकि इन्हें थोड़ा आराम मिले।

वह पैर के पास बैठकर मनोज के तलवे को धीरे–धीरे रगड़ती है। पैरों में हथेलियों के घर्षण से अचानक मनोज की नींद खुल गयी।

''जग गए! रात वाली दवाइयाँ खानी बाकी है, रुको दवाइयाँ देती हूँ।''

वृंदा टैबलेट और पानी का गिलास मनोज की तरफ बढ़ाती है। मनोज दवाइयाँ खाता है और वृंदा जैसे ही वापस जाने के लिए मुड़ती है, वह उसका हाथ पकड़ लेता है।

''तुरंत वापस क्यों जा रही हो! थोड़ी देर मेरे पास भी बैठो।''

''तुम्हारे पास...! तुम्हारे पास तो आज तक नहीं बैठी। पास आने का अधिकार तो तुमने मुझसे छीनकर किसी और को दे दिया।''

तभी मनोज वृंदा को अपने सीने के पास खींच लेता है। जिस मनोज ने वृंदा के सपनों को टुकड़ों में विभक्त कर दिया था, आज उसे नायाब उपहार की तरह बाहों में समेटने को आतुर हो रहा था। वह वृंदा की हथेलियों को होंठों के पास लाता है फिर आगे बढ़कर गालों पर अपने गरम होंठों की ताप छोड़ देता है। वृंदा जो पति के इस प्रेम से अब तक वंचित थी, कोई प्रतिरोध नहीं करती है। वृंदा के कोमल होंठों पर अब मनोज के होठ आग की लपटों की तरह दहक रहे थे। दोनों इस दहक में अपनी ताप को समर्पित कर देते हैं।

वृंदा जब संभलती है तो मनोज को बिस्तर पर सुकून से भरे मन के साथ पाती है। वह स्वयं भी पसीने से तर–बतर अपनी साड़ी संभालती वापस अपने कमरे में चली जाती है। दोनों प्रेम अग्नि में अगले दो–तीन दिन खुद को समर्पित कर देते हैं।

वृंदा का रोम–रोम पुलकित हो जाता है। मनोज ने भी बाहरी रूप से परे आंतरिक सुंदरता की धनी वृंदा को महसूस किया था।

इधर शोभा भी बच्ची को लेकर ससुराल वापस आ गयी। उसके आते ही मनोज का व्यवहार पहले की भांति हो गया। वह वृंदा को अनदेखा करने लगा। सारा प्यार अपनी

नवजात बच्ची और शोभा पर लुटाता। वृंदा यह देखकर आहत हो गयी।

''तो क्या मनोज ने मुझे पत्नी नहीं बल्कि भोग का सामान समझा, जो शोभा की अनुपस्थिति में अपनी वासना को शांत करने के लिए मेरे तन को रौंदा! मैं मूढ़ उसे प्रेम की पराकाष्ठा मान बैठी, लेकिन हाय री किस्मत मनोज फिर मेरी भावनाओं से खेल गया।''

धीरे–धीरे वृंदा फिर दुख से उबरने की कोशिश करने लगी। अभी महीना डेढ़ महीना ही बीता था कि उसे शरीर में थकान कमजोरी महसूस होने लगी। एक दिन वह चक्कर खाकर गिर पड़ी। हाथ में लिए बर्तन जमीन पर बिखर गए। आवाज सुनकर सब भागे आए। मनोज ने सहारा देकर वृंदा को उठाया और कमरे में ले जाकर बिस्तर पर लिटा दिया।

''देखो जरा, कहीं गहरी चोट तो नहीं आयी! पता नहीं आंखें बंद करके चलती है जो कहीं टकराकर गिर पड़ी।''

वृंदा की सास ने चिढ़ते हुए कहा। तब तक मनोज डॉक्टर को बुला लाया था। डॉक्टर साहब ने वृंदा को देखा, जाँचा फिर बोले, ''बधाई हो... यह मां बनने वाली है। आप लोग इसका विशेष ख्याल रखें।''

डॉक्टर की बात सुनकर वृंदा की सास अवाक् रह जाती है, ''यह कब हो गया!''

वहीं शोभा को भी झटका लगा। डॉक्टर के जाते ही वह मनोज पर बरस पड़ी, ''आपने कहा था ना कि आप सिर्फ मुझे ही पत्नी के सारे अधिकार देंगे, इसकी तरफ देखेंगे भी नहीं. फिर यह क्या है?''

''तुम बात समझो शोभा, जाने कब कैसे बहक गया कुछ पता न चला,'' मनोज सफाई देता है।

''वह सब मैं नहीं जानती. इसका गर्भपात करवाओ, जल्दी से जल्दी।''

शोभा की बात सुनकर उसकी सास बोलती है, ''अब जो हो गया सो हो गया। सारी बातें भूल जाओ। वृंदा पेट से है तो उसके बच्चे को मत गिराओ। कौन जाने उसके गर्भ में हमारा वंश पल रहा हो।''

''मांजी...आपने... मतलब मेरी पीठ पीछे आप सबकी मिली भगत से यह गुल खिला है!'' शोभा गुस्से में बोलती है।

''चाहे जो हो, उसका गर्भ गिराना होगा। मुझे मेरे बच्चों का हिस्सेदार नहीं चाहिए। अगर उसका बच्चा रखोगे तो मैं जान दे दूंगी। अब आप लोग सोच लो,'' शोभा गुस्से में फुफकारते हुए कमरे में चली जाती है और अंदर से दरवाजा बंद कर लेती है।

घर में सभी लोग परेशान हो जाते हैं। मनोज वृंदा को गर्भपात करवाने के लिए कहता हैं, लेकिन वृंदा ऐसा करने से इनकार कर देती है।''

''नहीं... मैं इस गर्भस्थ शिशु की हत्या नहीं करूंगी। यह मेरे शरीर का अंश है। मेरी उम्मीद है, जीवन का रंग है। आज तक मैं बिना अपराध के सजा पाती आयी। मेरा ऐसा रूप है तो इसके लिए मैं दोषी नहीं! पिता ने छुपाकर शादी कर दिया, इसमें भी मेरा कोई दोष नहीं! मुझे शुरू से दब्बू और समझौते करने वाली बना दिया गया, इसमें भी मेरा क्या दोष?''

''बिना अपराध के बहुत सजा पा लिया मैंने। जीवन में बहुत कष्ट उठा लिए, लेकिन बस... अब और नहीं... मेरा बच्चा बिना किसी दोष के सजा नहीं पाएगा।''

''अगर हमारी बात नहीं मानेगी तो हम तुम्हें घर से निकाल देंगे। रोड पर भटकोगी फिर तुम और तुम्हारा बच्चा,'' मनोज कड़क स्वर में कहता है।''

''मैं स्वयं इस घर को छोड़कर जा रही हूं। यहां मेरा बच्चा असुरक्षित रहेगा इसलिए मुझे यहां नहीं रहना,'' कहकर वृंदा अपना बैग पैक करती है और वहां से उस महिला डॉक्टर के पास चली जाती है, जिसे शोभा की डिलीवरी करवाई थी।

वह महिला डॉक्टर वृंदा के कदम की सराहना करती है और उसे मनोज को तलाक का नोटिस भेजने की राय भी देती है। ताकि वृंदा तथा उसके बच्चे के जीवनयापन के लिए कुछ आर्थिक सहायता मिल जाए। अब वृंदा मनोज को तलाक का नोटिस भिजवाती है तथा स्वयं वह डॉक्टर साहिबा के पास रहकर उनके क्लीनिक में छोटे–मोटे काम करने लगती है। इस प्रकार वह अपने सजायुक्त जीवन को सफल जिंदगी की तरफ मोड़ती है। ◆

पता : रेलवे हण्डर रोड, पश्चिमी लोहानीपुर, कदमकुआं, पटना–800003

मो. : 9308162129

दिखता नहीं क्या ?

❑ सियाराम पांडेय 'शांत'

समय हमेशा एक जैसा नहीं होता। बदलता रहता है। तरह–तरह के नजारे दिखाता रहता है। कभी व्यक्ति को सम्मान दिलाता है और कभी अनायास ही अपमानित भी करा देता है। बलभद्र चौबे इसका अपवाद कैसे हो सकते थे? वाराणसी में रहते हुए यह उनका पांचवां साल था। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य कर रहे थे। गंगा स्नान और बाबा विश्वनाथ का दर्शन–पूजन उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग था। अपने इस नियम को उन्होंने कभी नहीं तोड़ा।

इधर, कुछ महीनों से वे हर शनिवार और मंगलवार संकटमोचन हनुमान जी के भी दर्शन करने लगे थे। इन सबके लिए किसी रिक्शे वाले को कष्ट देने की बजाए वे पदयात्रा करना ज्यादा मुफीद समझते थे। मंगलवार को भी वे पैदल ही आए थे। संकटमोचन के दर्शन–पूजन के बाद वे मंदिर से निकले ही थे कि प्रेमनारायन पांडेय ने उन्हें आवाज दी। किधर जाएंगे चौबे जी। चौबे जी हंसते हुए बोले–अपनी तो एक ही मंजिल है तो आइए, सवार हो जाइए अपनी साइकिल पर। समय बच जाएगा और बातचीत में रास्ता भी कट जाएगा लेकिन साइकिल तो मैं ही चलाऊंगा। कोई बात नहीं। अपना भी श्रम बचेगा। दूसरे काम में लगेगा। हंसते हुए दोनों मित्र साइकिल पर सवार हो गए। बलभद्र चौबे साइकिल चला रहे थे। सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन दुर्गाकुंड के मोड़ पर एक अप्रत्याशित घटना हो गई। सामने से अचानक एक कार आ गई। उससे तो चौबे जी ने टकराहट बचा ली, लेकिन परेशानी जब आती है तो संभलने का मौका नहीं देती। एक मोपेड इसी बीच उनकी साइकिल से टकरा गई। मोपेड सवार युवती सड़क पर गिर गई थी और उसके ऊपर चौबे जी गिर गए। गिरे तो प्रेम नारायण भी, लेकिन वे थोड़ा अलग गिरे। यह सब यंत्रचालित तरीके से हुआ। चौबे जी हड़बड़ाकर उठ गए। हाथ पकड़कर संबंधित युवती को उठाया और अकस्मात हुए इस सड़क हादसे के लिए क्षमा याचना की, लेकिन युवती भड़क गई।

प्रत्यक्षदर्शियों की प्रश्नाकुल नजरों ने भी एक तरह से इस क्रोध की ज्वाला को धधकाने का काम किया। हर कोई पूछता चोट तो नहीं लगी? वह नहीं शब्द से सबको जवाब देती रही, लेकिन यही सवाल जब बलभद्र चौबे ने पूछ लिया तो वह आग–बबूला हो उठी। कहा–अंधे हो क्या? देख कर साइकिल नहीं चला सकते। जाहिल कहीं के। सारी ड्रेस बिगाड़ दी। बलभद्र ने सफाई देने की कोशिश की, लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ। उसने तो यह भी कहा कि मुझे सब पता है कि तुम्हारे जैसे लोगों की सोच क्या है? जवान लड़की देखी नहीं कि दिल मचल उठता है। इसके बाद उसने अपनी मोपेड उठाई और जिधर से आ रही थी, उसी दिशा में चली गई। शायद यही उसके लिए अभीष्ठ भी था। बलभद्र ने भी बात को आगे बढ़ाना उचित नहीं समझा। लड़कियों से उलझना वैसे भी उनके संस्कारों के अनुरूप नहीं था। अबकी प्रेम नारायण ने साइकिल का हैंडिल संभाल लिया था। रास्ते भर दोनों के बीच कोई बात नहीं हुई। शरीर पर लगी चोट से ज्यादा दिल पर लगी चोट उन्हें दुख पहुंचा रही थी। दोनों लंबे समय तक सदमे में रहे। इस घटना को वे जितना भुलाना चाहते,वह उतनी ही याद आती। इस घटना को महीनों बीत गए थे। प्रेम नारायण पांडेय गंगानाथ झा हॉस्टल आए थे। आते ही कहा–चौबे जी पकौड़े नहीं खिलाओगे। चौबे जी, मुस्कुरा उठे। बहुत दिन बाद चांद जमीन पर उतरा। पुराने घावों को कुरेदने की बजाय प्रेमनारायण ने कहा कि माता शैलपुत्री के दर्शन का इरादा था। सो इधर चला आया, तो आप भी चलना पसंद करेंगे। क्यों नहीं, नेकी और पूछ–पूछ। बलभद्र ने विहंसते हुए कहा, लेकिन पहले पकौड़े तल लेते हैं। फिर चलेंगे माता रानी के दरबार। डेढ़ घंटे बाद दोनों दोस्त मां शैलपुत्री के दरबार में थे। वहां से हॉस्टल लौटे तो डाकिए से मुलाकात हो गई। उसने एक रजिस्टर्ड पत्र दिया। पत्र खोलते ही बलभद्र की बांछें खिल गईं। पांडेय जी, माता रानी की कृपा और आप ब्राह्मण श्रेष्ठ के चरणों की शुभता से मुझे दिल्ली के कॉलेज में प्रवक्ता की नौकरी मिल गई है। आप रुकिए। मैं मिठाई लेकर आता हूँ। सामने के मंदिर में चढ़ाकर प्रसाद लेते हैं। मित्र के सुख सागर में प्रेमनारायण भी गोते लगाने लगे। उन्हें क्या पता था कि उनकी भी नौकरी काशी विद्यापीठ में लग चुकी है। वे भी लेक्चरर हो चुके हैं और डाकिया उनके घर में भी आह्लाद की कुंडी खटखटा गया है।

तय समय पर दोनों ने ही पदभार संभाल लिया था। दोनों ही अपनी दीन–दुनिया में उलझ गए थे। इस घटना के करीब पांच साल बाद सुबह–सुबह प्रेमनारायण पांडेय का फोन बजा। वे लपक कर लैंड लाइन फोन के पास पहुंचे। कौन? मैं बलभद्र। कैसे हो प्रेम। मैं ठीक हूं। अपनी बताओ। बहुत दिन बाद याद आई तुम्हें अपने प्रेम की तो कौन सा तुमने ही फोन कर लिया? बलभद्र की आवाज में शिकायत भी थी और नाराजगी भी। प्रेम ने सफाई दी कि मेरे पास तुम्हारा दिल्ली वाला नंबर नहीं था। दोनों की बातों में दम था। कोई अपने तईं झूठ नहीं बोल रहा था। कुछ हालात ऐसे ही होते हैं कि न चाहने पर भी झेंपने को मजबूर कर देते हैं।

बलभद्र ने वातावरण को हल्का किया। सुनो प्रेम, कहां फोन के चक्कर में फंस गए। दरअसल तुमसे कुछ खास बात करनी थी। शादी कर ली। नहीं, अभी नहीं तो फिर ठीक है। कहां रह रहे हो। काशी विद्यापीठ की प्रोफेसर कॉलोनी में। फिर तो ठीक है। कल सुबह मैं कैंट स्टेशन पहुंच जाऊंगा। स्टेशन आ जाना। सुबह का नाश्ता तुम्हारे साथ करेंगे। दोपहर 12 बजे काशी हिंदू विश्वविद्यालय में सेमिनार है। तुम भी साथ चलना। कल अपने यहां छुट्टी ले लेना। वह तो मैं पहले ही ले चुका हूं। उस कार्यक्रम में मैं भी बतौर अतिथि वक्ता आमंत्रित हूं। सरिता मिश्र उस सेमिनार की संयोजक हैं न। हां–हां बिल्कुल सही कहा। बलभद्र की इस बात को काटते हुए प्रेम ने वार्ता के सिरे को और विस्तार दिया। विषय है–राष्ट्र निर्माण में संस्कृत की भूमिका। प्रेम के इतना कहते ही बलभद्र चहक उठे। मजा आ गया यार। रास्ते में संकटमोचन के दर्शन भी कर लेंगे फिर कल गाड़ते हैं बीएचयू में झंडा। क्यों फिर किसी से टकराने का इरादा है क्या? नहीं भाई और दोनों मित्र अट्ठहास कर उठे।

बलभद्र के आगमन की सूचना भर से प्रेम का मन पुलकित हो उठा था। सारी रात वे ठीक से सो न सके। बीच–बीच में नींद खुलती रही। दीवार घड़ी देखते और फिर सो जाते। सुबह ट्रेन आने से पहले ही प्रेम नारायण स्टेशन

पहुंच गए थे, ज्योंहि बलभद्र ट्रेन से उतरे, उन्होंने दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। अश्रु विगलित नेत्रों से दोनों ने एक दूजे का स्वागत किया।

कृष्ण–सुदामा वाली इस दोस्ती को जिसने भी देखा, उसकी आंखें सजल हुए बिना नहीं रहीं। घर आने के बाद प्रेम नारायण ने बड़े प्रेम के साथ नाश्ता बनाया। इस बीच दोनों अतीत की स्मृतियों में उलझे रहे। काशी से दिल्ली तक विचार मंथन का सिलसिला विस्तृत होता रहा। ठीक 11 बजे दोनों ने घर छोड़ दिया और नियत समय पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय पहुंच गए। उस सेमिनार में देश भर के 30 वक्ता आए थे। सभी ने प्रभावी वक्तव्य दिया, लेकिन सभा में बलभद्र चौबे और प्रेमनारायण पांडेय ने अपने वक्तव्य से जो समां बांधा उसमें लोग मंत्रमुग्ध हो उन्हीं को सुनते रहे। बलभद्र पर तो जैसे आज देवी सरस्वती पूरी तरह मेहरबान थीं। संस्कृत पर जो प्रभावी वक्तव्य उन्होंने दिया कि कार्यक्रम स्थल उनके भाषण पर्यंत करतलध्वनि से गूंजता रहा। कार्यक्रम के समापन के उपरांत कुलपति ने बलभद्र चौबे को गले लगा लिया। कार्यक्रम की संयोजिका सरिता मिश्र ने भी हाथ मिलाकर उनका अभिवादन किया। छात्रों से भी बलभद्र चौबे और प्रेमनारायण पांडेय को खूब प्रशंसा मिली।

कार्यक्रम की औपचारिकताओं से फारिग होकर दोनों मित्र संकटमोचन मंदिर आ गए। तब प्रेमनारायण ने कहा कि बलभद्र भाई ! आपने कार्यक्रम में कुछ खास नोटिस किया। वे बोले क्या खास रहा। कुछ भी तो नहीं। प्रेम नारायण ने कहा कि मेरा इशारा संयोजिका की ओर था। अब बलभद्र थोड़ा चौंके, लेकिन जल्द ही संयत होकर बोले। हां, उसे देखकर मुझे साइकिल और मोपेड की टक्कर याद आ गई थी। अगर मैं गलत नहीं सोच रहा तो यह वही लड़की हो सकती है। वैसे अच्छी तरक्की की है उसने। होनहार तो है ही। बिल्कुल ठीक कहा भाई साहब, लेकिन उतनी नकचढ़ी लड़की इतनी सौम्य और सुशील कैसे हो सकती है? बलभद्र बोले– पांडेय जी वक्त सब सिखा देता है फिर एक घटना के आधार पर किसी के भी बारे में गलत धारणा क्यों बनाई जाए। जो बीत गया सो बीत गया। अब उस घटना को कुरेद कर अपना मन मलिन क्यों करना? संकटमोचन मंदिर में दर्शन के बाद दोनों विद्वान मित्र बाबा विश्वनाथ के दरबार में पहुंचे। वहां पूजन–अर्चन किया। दूसरे दिन बलभद्र दिल्ली चले गए, नौकरी की विवशता जो थी।

इधर, सरिता मिश्र जो बीएचयू में समाज शास्त्र की प्रोफेसर हो चुकी थीं, उन्होंने बलभद्र चौबे से अपना संवाद बनाए रखा। वर्षों तक दोनों के बीच वार्तालाप होता रहा और अंत में उसकी परिणिति विवाह के रूप में हुई। प्रेमनारायण उस विवाह के विशेष मेहमान थे। इस शादी के एक साल बाद प्रेमनारायण पांडेय को संसद के केंद्रीय कक्ष में शिक्षा क्षेत्र का विशिष्ट पुरस्कार मिला। उस कार्यक्रम में बलभद्र चौबे भी अपनी पत्नी सरिता मिश्र के साथ मौजूद थे। वहां से तीनों अपने आवास पर आ गए। प्रेमनारायण को शरारत सूझी। कहा– भाभी आप अंधी तो हैं नहीं फिर आपने एक अंधे को अपना पति क्यों चुना? बलभद्र को काटो तो खून नहीं, लेकिन वे चाहकर भी अपने अजीज दोस्त को रोक नहीं पाए। सरिता मिश्र ने कहा कि प्रोफेसर साहब मैं आपका आशय समझी नहीं। भाभी जी, आशय समझने के लिए आपको छह साल पुराने फ्लैशबैक में जाना होगा। दुर्गाकुंड में हुए एक सड़क हादसे को याद करना होगा। तब मैं भी आपको याद आ जाऊंगा और प्रो. बलभद्र चौबे भी। सरिता को वह घटना याद आ गई तो क्या आपने सब जानने के बाद भी मुझसे विवाह किया चौबे जी। हां सरिता। हम दोनों ने बीएचयू वाले सेमिनार में ही तुम्हें पहचान लिया था, लेकिन तब तक तुम बहुत बदल चुकी थी। वह एक हादसा था और हादसों को याद कर दुखी होते रहने का वैसे भी कोई औचित्य नहीं है। सरिता ने अपनी उस दिन की भूल के लिए दोनों से माफी मांगी। उसकी आंखों में आंसू आ गए। बलभद्र चौबे ने अपनी रुमाल से उसके आंसू पोंछ दिए और बोले –सरिते! मुझे उस घटना का न तब शिकवा था, न आज है और न भविष्य में कभी रहेगा। तुम जैसी भी हो, मेरी हो और जो अपनी हो, उससे कैसी शिकायत। सरिता उनके गले लग गई। बोली–वक्त भी क्या चीज है। अच्छे–भले आदमी से कुछ भी करा देता है। ◆

पता : एच.आर. ए.–2, खसरा नंबर 259, रॉयल ग्रीन सिटी कॉलोनी, लौलाई, चिनहट, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मो. : 7459998968

विनय मिश्र की चार गजलें

विनय मिश्र

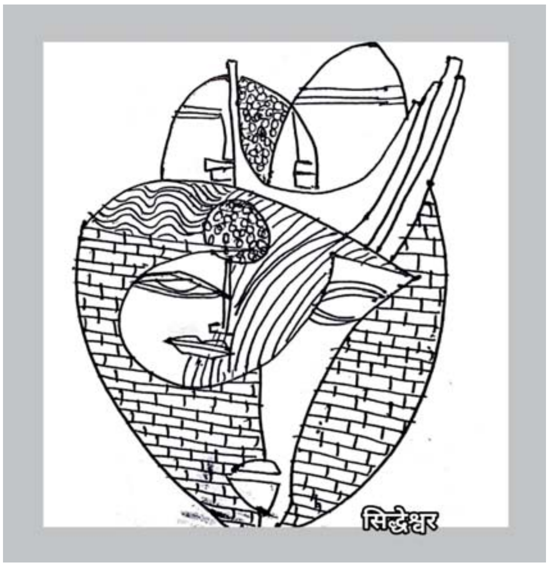

गजल (1)

रात गए आँखों में इसका दिखना ही तो है
पास हमारे एक सुबह का सपना ही तो है

कितने रस्ते इस बहते पानी ने खोल दिए
मेरा लिखना इस मौसम का झरना ही तो है

दुनिया भर की चिंताओं में ही डूबे रहना
अपनी चाहत की दुनिया में रहना ही तो है

उसकी सुनना उसकी कहना उसका हो जाना
यह उसके मतलब के आगे झुकना ही तो है

एक अधूरेपन में जीना अपने जीवन को
थोड़ा–थोड़ा करके पूरा करना ही तो है

यूँ टूटी–फूटी नींदों में अधसोया रहना
मेरे देखे यह ख़्वाबों का जगना ही तो है

एक खुशी का रोज चमकना मेरी बातों में
उम्मीदों के एक दिए का जलना ही तो है।

गजल (2)

भले कुछ जख़्म गहरे साथ लेकर चल
मगर कुछ ख़्वाब अच्छे साथ लेकर चल

पुरानी नींद में ही रात क्यों ठहरे
नए सूरज के सपने साथ लेकर चल

मैं चलना चाहता हूँ साथ ही तेरे
मुझे भी धीरे–धीरे साथ लेकर चल

इन्हीं रस्तों से ही तो लोग जाएँगे
यही चलने के रस्ते साथ लेकर चल

दुखों में रोशनी मिल जाएगी तुझको
कभी आँसू चमकते साथ लेकर चल

लड़ाई मौत से जब ठन गई है तो
तजुर्बे जिंदगी के साथ लेकर चल

जहाँ पर छूट जाऊँ छोड़ देना पर
वहाँ तक उसके पहले साथ लेकर चल

मुझे भी दुख है कि तू भी अकेला है
तभी कहता हूँ प्यारे साथ लेकर चल

इन्हीं में से खिलेगा कोई फूलों—सा
सभी दुख दर्द अपने साथ लेकर चल।

गजल (3)

जीवन परतों दर परतों में सिमट गया
सारा मौसम दो आँखों में सिमट गया

जिसकी धूप का परचम दिन भर उड़ा यहाँ
वो सूरज अपने सायों में सिमट गया

सुख के सागर—सा बाजार लगा था पर
चाहत की सूखी नदियों में सिमट गया

वो फैला आकाश भी देखो यहाँ कि जो
उड़ती चिड़ियों के पंखों में सिमट गया

होने को था मेरा कद कुछ बड़ा मगर
मैं जीने की तरकीबों में सिमट गया

जनता दुबकी है कोने में डरी हुई
सत्ता का सुख तो दंगों में सिमट गया

उत्तर चुप बैठे हैं कब से पता नहीं
मैं भी केवल कुछ प्रश्नों में सिमट गया।

गजल (4)

अँधेरों में चमकना याद है क्या
सुबह का कोई सपना याद है क्या

उमीदों की किसी पागल हवा में
नदी के जल—सा बहना याद है क्या

जहाँ तक जा रहा था रास्ता वो
वहाँ तक साथ चलना याद है क्या

ये रातों की उदासी आज है न
इसी में चाँद उगना याद है क्या

जो बढ़ती दूरियों में खो गया हो
कोई ऐसा भी अपना याद है क्या

खुली आँखों से दुख के जंगलों में
सुखों का ध्यान करना याद है क्या

दबे पाँवों बहुत गहरे उतरकर
किसी के दिल में बसना याद है क्या

गिरी हो बर्फ जिस पर पेड़ को उस,
हरे रंगों में दिखना याद है क्या

भटकती आत्मा की धुंध में अब
मुझे खुद से बिछड़ना याद है क्या?

◆

पता : बी 27/64 सी.एण्ड.डी., दुर्गाकुंड, कुष्मांडा अपार्टमेंट, ग्राउंड फ्लोर, फ्लैट नंबर—1, आनंद पार्क के सामने, वाराणसी—221005, उ.प्र.
मो. : 9414810083

भूल जाओ

रंजना जायसवाल

भूल जाओ,
भूल जाओ
बेकार की बातों को
क्यों पकड़कर बैठ जाती हो हर बार
वह ताकती रही एकटक
क्या कहती
वह नहीं बैठती
बातें ही उसे लेकर बैठ जाती है।
चिपक जाती हैं वे बातें
उसकी देह से बरसों बरस
चाह कर भी छुड़ा नहीं पाती
वह अपने देह से...
क्योंकि उन्हें छुड़ाने से पहले
एक और बात
उसके देह से चिपक जाती है।
कैसे समझाती...
इतना आसान नहीं होता,
उन बातों से अपने आप को छुड़ा पाना।
वे बातें तीर सी चुभती है।
लहूलुहान करती है
उसके तन को ही नहीं, मन को भी...
तन के घाव तो शायद वक्त के साथ भर भी जाएं
पर मन पनपता है
भावों और सम्वेदनाओं के साथ
जिसे आहत करने के बाद घाव
शायद कभी नहीं भरते
और न ही सूखते हैं।
क्योंकि...
अक्सर ये घाव अपनों के दिए ही होते हैं।

◆

पता : लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही,
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश–231001
मो. : 9415479796

"कुछ अधूरी बातें, कुछ अधूरी यादें"

अनन्या शुक्ला

याद आती हैं तेरी बातें,
जब खामोशी से खुद को देखती हूँ आईने में।
उस ठहरे हुए पल में,
जैसे वक्त भी थम जाता है मेरे साथ।

आईने में दिखती हैं मेरी आँखें,
उन आंखों में तेरी परछाई–
तेरी आवाज, तेरी वो मासूम सी नजरें,
जिन्हें मैं कभी पढ़ नहीं सकी उस गहराई से।

तेरी कही अनकही हर बात,
हर सुबह की रोशनी के साथ लौट आती है।
लौट आती है वो यादें
जिसमें दिन की शुरुआत होती थी मंदिर की घंटियों से।
जैसे तेरी यादें मेरी सांसों में रम गई हों,
हां माना कि आज तू मेरे पास होते हुए भी मुझसे दूर है।
फिर भी ऐसा लगता है,
जैसे तू आज भी कहीं यहीं हो... बस थोड़ा सा खोया हुआ।

कभी–कभी लगता है,
आईना झूठ नहीं बोलता,
क्योंकि उसमें मैं नहीं,
बल्कि 'हम' दिखते हैं– अधूरे, पर सच्चे।

तेरी बातें सिर्फ बातें नहीं रहीं,
अब वो मेरे अकेलेपन की साथी हैं।
और जब भी मैं देखती हूँ आईने में,
मुझे फिर से सुनाई देती हैं–
तेरी वही कही हुई बातें...

◆

पता : केंठी ढोला, विस्वा, सीतापुर–261201
मो. : 9580651476

निर्णय......!

जितेन्द्र कुमार दुबे

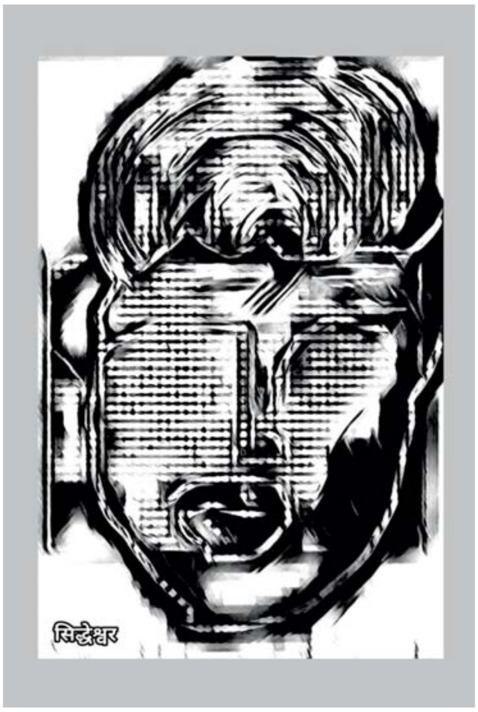

पता नहीं....!
सही होता था या गलत....पर...
हमारे गाँव–देश के... घर परिवार में,
यहाँ तक कि... समाज में भी...
कोई भी निर्णय...!
समवेत ही होता था...
ना किसी को... कोई शिकवा...
ना शिकायत किसी को...
ना किसी का... मतभेद होता था...
पर... निर्णय.... आज का....!
एक ही व्यक्ति का आदेश हो गया है
भले....खुद ही वह.... भ्रम या...
अनिर्णय की स्थिति में हो...
मित्रों.... इस अनिर्णय के पीछे.....!
चाहे ज्ञात भय कारण हो,
या फिर.... अज्ञात भय का कारण हो
पर गौर से देखो तो... हमारे समाज में
कदाचित सामाजिक बन्धन का...!
तेजी से... हो रहा क्षरण है...
इसको आड़ देने को... लोगों ने...
विकास के इस दौर में प्यारे...
पता नहीं किन–किन सिद्धांतों का...!

लोगों ने कर लिया वरण है....
हमें इलाज कोई इसका प्यारे....!
जल्द ही.... ढूँढ़ना होगा....
ढूँढ़ना होगा.... गहराई से...
भय या फिर... अज्ञात भय का कारण
करना होगा.... समय से...
इस समस्या का समूल निवारण....
न सिर्फ कोई नई परिभाषा गढ़कर...
वरन... साथ में मिल–बैठकर....
किताबी ज्ञान से कुछ हटकर,
अलख कुछ नई सी जगाकर....
या फिर..... पुरखों–पुरनियों की...
कही हुई बातें आजमाकर....
बताना होगा हमें लोगों को,
लोकोक्तियों और मुहावरों का...!
एक सही निर्णय.... जिससे...
निश्चित ही सँवरने लगेगा.... हमारा...
छिपा हुआ गूढ़ राज....
चिंतन–मनन के बाद ही इसके....
सामने आ सकेगा.... शायद....!
आने वाला कल और आज....
आने वाला कल और आज....

◆

पता : अपर पुलिस आयुक्त, लखनऊ (उ.प्र.)

मो. : 8299195923

संसार

शिवकुमार मिश्र 'नीलकण्ठ'

देखा, सुना, पढ़ा
तथा जिया भी
मैंने, उसने, तुमने
तथा सबने भी
एक संसार,
संसार
जो है जीवन का सार
प्रसन्नताओं का आधार
तथा,
दुश्चिन्ताओं का अम्बार
बावजूद इसके बारे में
क्या कहा जा सकता है
अगर पूछ दे कोई
वाजिब सवाल ?
जरा गौर से सोचें
कि–संसार है शायद
नारंगी सी गोल धरती
का रंग विरंगा
विचित्र छिलका
जिसमें सब है
घूमते फिरते
तथा अपने हिसाब से
छिलका उतारने का
प्रयास करते
एक खट्टे मीठे
गूदे की तलाश में
यह संसार है वह सब
जिसे हर कोई
भ्रम वश ही सही
कहता है अपना
जो है हकीकत
या फिर सपना
संसार है आदि मदारी का
बिखरा विचित्र पिटारा
जहाँ हर इन्सान
दिल की धड़कन में
है डमरू की नाद सुनता
तथा हर वक्त
समय के हाथ में
जमूरा बना फिरता
या फिर
संसार है
प्रकृति सुन्दरी के
स्निग्ध, सुन्दर
तथा जादुई चेहरे
पर बना
माया का मनोहर
मकड़ जाल
जिसमें हर जीव
जन्म से ही फंसकर
अभिसार हेतु तड़पता
अपना बनाना चाहता
किन्तु
स्थाई सानिध्य नहीं पाता
या फिर
संसार है एक रंगीला मैदान
जो अपने ही अस्तित्व में
सृजन एवं विनाश
के बीच में है
अनवरत युद्ध करवाता
तथा सदा
सृजन को ही
शाबाशी देकर
है पीठ थपथपाता

◆

पता : कम्हरियाँ बुजुर्ग,
महराजगंज–273309
मो. : 8853672413

बचपन की अठखेली

अलका अस्थाना

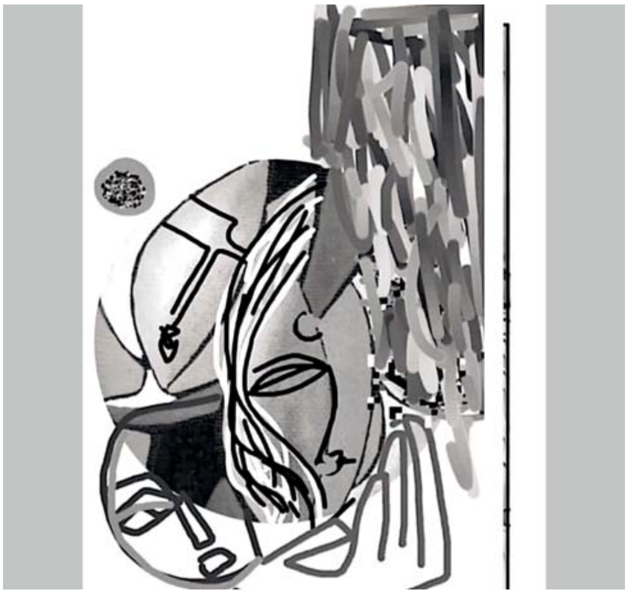

छप्पर छैया झुमरी तलैया,
वर्षा रानी आओ ना।
झूम–2 के आयें घटाएं
वर्षा रानी आओ ना।

खेतों में देखी हरियाली,
डाली डाली है मतवाली।
डोल रही है गुड़िया रानी,
कागज की नावें हैं खाली,
बचपन की अठखेली गाये।
मन तो हर्षाओ ना।

अम्मा के मीठे पकवान,
दादू के मीठे थे पान।
चाय पकौड़ी खाते थे हिलमिल,
मेल–मिलाप का था मान,

निमवा पर झूले है झूला।
पेग प्रेम लगाओ न।
सखी सहेली मेहंदी खेले,
महके महके आंगन मेले।

चारपाई पर खेले कौड़ी,
खेल खेल में खेले मोड़ी।
चूता था कक्कू का मकान।
सोंधी मिट्टी गाओ ना।

◆

पता : 356/24, आलम नगर रोड, बावली चौकी, लखनऊ–226017
मो. : 8934884441

फ़िराक़ की शायरी

❑ सूर्यकांत शर्मा

उत्तर प्रदेश गंगा जमुनी तहजीब का एक मंजर है और गोरखपुर इसका चमचमाता नगीना है। गोरखपुर से एक शहंशाह शायर फिराक़ गोरखपुरी रहे हैं। फ़िराक़ के बारे में यूं तो लोग बहुत कुछ जानते हैं परंतु आज की जेनरेशन यानी युवा होते भारत को फ़िराक़ गोरखपुरी के बारे में बताना उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित कराना कठिन ही नहीं बल्कि श्रम साध्य कार्य है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी त्रिभाषा फार्मूले को अपनाने का उद्देश्य भी यही है कि पहले स्थानीय भाषा का ज्ञान और बाद में किशोरों व युवाओं को उनके स्थानीय और अखिल भारतीय स्तर की संस्कृति विभूतियों से परिचय करवाया जाए, ताकि पढ़ता बढ़ता बालक, किशोर और युवा हमारे भारत की श्रेष्ठता तथा इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में जानें। यही युवा जब कॉलेज या उससे आगे बढ़ें तो वह एक जिम्मेदार नागरिक और संतुलित रूप से विकसित मानव भी हों। इसी क्रम में फ़िराक़ गोरखपुरी सरीखे विद्वान आते हैं। यूं तो उर्दू भाषा में फ़िराक़ के बारे में बहुत कुछ लिखा गया और उर्दू साहित्य में जितना ऊंचा स्थान उन्हें मिला है उतना किसी भी अन्य शायर को नहीं मिला है। उर्दू मीठी और छुपी संभावनाओं की भाषा है, जिसमें दिल भाव कला और तहजीब अपना सानी नहीं रखते।

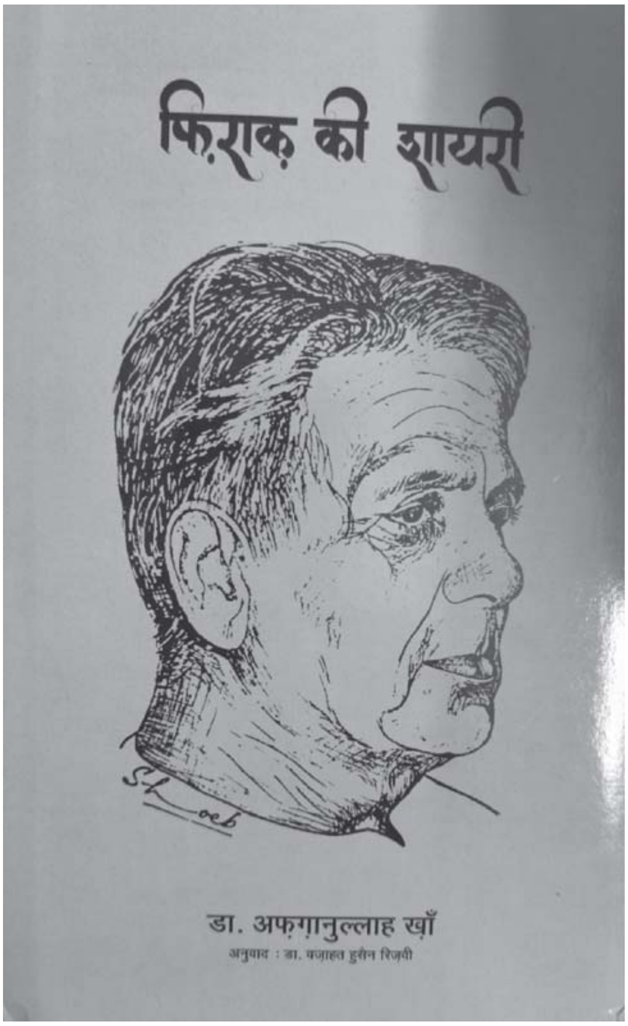

फ़िराक़ गोरखपुरी पर पहला कार्य करने का श्रेय स्वर्गीय डॉक्टर अफगानुल्लाह ख़ां साहब को जाता है, जिन्होंने फ़िराक़ को समूची उर्दू भाषा की दुनिया से परिचित करवाया। यह भी एक सुखद संयोग है कि उन्हीं के पट्ट और पहले शिष्य डॉक्टर वजाहत हुसैन रिजवी ने उस समूचे कार्य को हिंदी भाषा

और साहित्य की वांछित आवश्यकताओं को पूरा करते हुए एक पुस्तक 'फ़िराक़ की शायरी' के नाम से कलमबंद कर हिंदी के पाठकों को एक अमूल्य सौगात या उपहार से नवाज दिया है। अनुवादक ने अपनी इस अनूदित कृति को अपने गुरुवर प्रोफेसर महमूद इलाही को अर्पित किया है।

पूरे पांच सौ पृष्ठ की यह एक ही जिल्द यानी पुस्तक फ़िराक़ के व्यक्तित्व और कृतित्व को समग्र रूप से खंगाल कर अनुसंधानित करती है। साथ ही प्रामाणिक औचित्यपूर्ण व्याख्यात्मक रूप में अपनी बात को गरिमापूर्ण तरीके से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। कहावत गागर में सागर यहां चरितार्थ होती स्पष्ट रूप से नजर आती है।

यह पुस्तक फिराक़ के जीवन के छुए और अनछुए पहलुओं के साथ—साथ उजले और धुंधलके वाले पक्षों—तथ्यों को औचित्यपूर्ण व्याख्यात्मक अंदाज से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। फ़िराक़ का जन्म कायस्थ परिवार में हुआ था और भोजपुरी भाषा में ही उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। पुस्तक में एक अध्याय गोरखपुर का साहित्यिक परिदृश्य है, जिसमें फ़िराक़ की प्रारंभिक शायरी, उस पर उस्ताद शायरों के प्रभाव तथा उनकी शायरी पर हिंदी अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण तथ्यों पर सारगर्भित जानकारी दी गई है। गोरखपुर के नाम और यहां का इतिहास, विभिन्न परिस्थितियों जिनमें प्राचीन, मुगल, बर्तानवी शासन और अद्यतन को सटीक अंदाज में पेश किया गया है। इस पुस्तक की विशेषता यह भी है कि कोई भी विश्लेषण करते हुए, चाहे वह व्यक्तित्व को लेकर हो या फिर कृतित्व पर, शोधार्थी ने बड़े ही औचित्यपूर्ण और अनेक तथ्यों विद्वानों के माध्यम से सटीक ब्योरा दिया है जिस से पाठक को सही जानकारी मिल जाती है। इस वृहद जिल्द यानी पुस्तक में विभिन्न अध्यायों, प्रभावी और सूक्ष्म अंदाज से खंगाले और प्रस्तुत किए गए हैं। फ़िराक़ की गजलगोई, फ़िराक़ की नज़्म निगारी, फिराक़ की रुबाइयां, फिराक़ का फिक्रों फन, फन (कलात्मक), हरफे आखिर और अंत में फ़िराक़ का संक्षिप्त परिचय भी इसमें दिया गया है।

सही अर्थों में यह पुस्तक पाठक को एक लंबी यात्रा पर ले जाने का वृतांत और सिनेमाई प्रयास प्रतीत होती है। फ़िराक़ के जन्म, बचपन, लड़कपन से होती यह पुस्तक उनके दिल और दिमाग की स्थिति को बताती स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका व उससे भी पहले अंग्रेजों द्वारा प्रदत्त नौकरी को, आजादी की लड़ाई का सच्चा सिपाही बनने हेतु उसे ठुकरा देने के प्रसंग इत्यादि उनके व्यक्तित्व को बहुत पारदर्शिता से बताते हैं। वहीं पर उनके वैवाहिक जीवन और किसी पुरुष का महिला बन पेन फ्रेंड बन जाना जैसे प्रसंग भी सच्चाई को बयां करते लगते हैं। फ़िराक़ साहब आजादी की लड़ाई में जेल भी गये और सजा भी भोगी। जेल में मुशायरा हुआ उसी में उनके द्वारा गजल पढ़ीं गई। उस समय के समाचार पत्र 'जमींदार' में 3, 4 और 24, फरवरी, 3 मार्च, 4 मई, 1922 को रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इस गजल की एक बानगी प्रस्तुत है :

तमाम आलमे इम्काँ में आलमे हू था/कोई नहीं था जिसे दिल पर अपने काबू था/सितारा चर्ख से था/टूट कर गिरा कोई/कि मुल्के हिंद की वह बेकसी आंसू था/यही थी बात कि बेताब कौम थी/जिससे जिगर को थामे में हर इक मुस्लिम और हिंदू था।

फ़िराक़ ने देश के स्वतंत्र होने के बाद क्रिश्चियन कॉलेज लखनऊ, सनातन धर्म कॉलेज कानपुर में प्रोफेसर की नौकरी की। सन् 1958 में वहां से रिटायर हुए और रिटायरमेंट के बाद यूजीसी की ओर से उन्हें रिसर्च प्रोफेसर का पद दिया गया और 1966 में वहां से रिटायर भी हुए। फ़िराक़ की शायरी को दो कालों में बांटा गया है, जिसमें प्रारंभिक शायरी जो सन 1922 से सन 1940 तक और उसके बाद उनके जीवन काल तक। फ़िराक़ की प्रारंभिक शायरी और बाद की शायरी में कई उर्दू शायरों का रंग झलकता है, जिनमें क्रमशः मोमिन, मुसहफी, अमीर मीनाई और बाद में मीर, गालिब, फानी, असगर, हसरत मोहानी और यास उल्लेखनीय हैं।

उनकी उस समय की शायरी को उदाहरण के तौर पर पाठक अवश्य पढ़ना चाहेंगे—तेरी महफिल में तेरा और अंदाजे बयां होगा/झड़ेंगे फूल मुंह से और हुजूमे में बुलबुलां होगा। बहारे गुल में मुझ पर मेहरबां जब बागबां होगा/रहूंगा मैं गुलों में शाखे गुल पर आशियां होगा।

फिराक ने अपने लंबे जीवन में उर्दू भाषा के साहित्य के साथ—साथ हिंदी को भी अपने योगदान से समृद्ध किया। अंग्रेजी भाषा और साहित्य के प्रोफेसर, विशेषज्ञ होने के नाते उन्होंने अंग्रेजी साहित्य का प्रयोग उर्दू तथा हिंदी भाषा में बहुत ही सुंदर और सार्थक ढंग से किया है, पुस्तक में इसे विस्तृत परन्तु रोचक तरीके से प्रस्तुत भी किया गया

है। इसकी बानगी पुस्तक के अध्यायों यथा फ़िराक़ पर हिंदी शायरी का प्रभाव, फ़िराक़ की शायरी में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव पर बहुत से अनुसंधान कर के सहज और सार्थक रूप में प्रस्तुत किया है।

जेरो बम से साजे / खिलकत के जहां बनता गया / ये जमीं बनती गई, ये आसमां बनता गया। फ़िराक़ की संस्कृति और हिंदी शायरी के गहरे अध्ययन को भी इस अनूदित पुस्तकीय शोध प्रबंध में स्थान मिला है। यहीं पर संस्कृत के एक नाटककार 'भास' ने एक स्थान पर लिखा है कि रात के अंतिम पलों में जलते हुए चिराग ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे निद्रा में डूबे हुए हों। यहीं पर फ़िराक़ साहब का चमत्कार देखिए दिलों में दागे मोहब्बत का अब यह आलम है कि जैसे नींद में डूबे हों पिछली रात चिराग।

फ़िराक़ की शायरी पर पश्चिमी साहित्य के प्रभाव पर विस्तृत अध्याय लिखा गया है। जिसमें प्रसिद्ध अंग्रेज कवियों के साथ साहित्यकारों के काव्य दिए गए हैं और साथ–साथ ही फ़िराक़ द्वारा लिखे गए काव्य की विभिन्न विधाओं में लिखे गए अंश भी दिए गए हैं ताकि पाठक को यह भली भांति रूप से ज्ञात हो सके कि यह प्रभाव कितना और कैसा था इसी के उदाहरण स्वरूप विलियम ब्लैक के एक शेर To see a world in a green a friend and heaven in a wild flower फ़िराक़ ने लिखा है जहां देखना है मिट्टी के एक रेजे में / नमूदे लाल ए खुदरौ में देखना जन्नत।

इस अध्याय को पढ़ने के बाद पाठक इस तरह के एक निष्कर्ष पर पहुंच सकता है कि फ़िराक़ ने ही अंग्रेजी नज़्मों के उर्दू अनुवाद के दौर को बड़ी कलात्मकता के साथ एक नई शायरी की परंपरा में बदला और यह उन्हीं का हुनर था कि उन्होंने अंग्रेजी शायरी के कई प्रभावी और महत्वपूर्ण रुझानों व रवैयों को उर्दू में परिचित कराया।

इस पुस्तक की विशेषता यह है कि यह फ़िराक़ गोरखपुरी को वर्णित करते समय जितने भी संदर्भ यथा व्यक्ति विशेष, विधा या अन्य कोई भी छोटी से छोटी बात भी अगर रास्ते में आती है तो उस पर भी प्रामाणिक और विस्तृत रूप से पाठकों को जानकारी दी गई है।

फिराक़ बहैसियत ग़ज़लगो में उर्दू भाषा और उसके साथ–साथ उसकी पूरी ऐतिहासिक जानकारी और उसके दीवानों, विद्वानों सभी का ब्योरा दिया गया है। जिसे अपना लाभ भी है और वह यह कि पाठक को एक ही स्थान पर मौलिक रूप से मूल जानकारी और फ़िराक़ गोरखपुरी पर केंद्रित जानकारी एक साथ मिल रही है। फ़िराक़ का घटनात्मक स्वभाव भी उनके व्यक्तिगत जीवन वंचनाओं निराशाओं और अपने काल के दुख सुख के मेल से निर्मित होता है। फ़िराक़ अपनी गजलों के माध्यम से केवल अपना ही दुख वर्णित नहीं करते, बल्कि संसार के दुख सुख का वर्णन भी करते हैं। उदाहरण के तौर पर अपना हो फ़िराक़ कि औरों का कुछ बात ही ऐसी आन पड़ी मैं आज ग़ज़ल के परदे में दुख दर्द सुनाने आया हूं।

उम्र फिराक ने यूंही बसर की
कुछ गमे दौरां कुछ गमे जानां।
शाम ही से गोश पर आवाज है बज्मे सुखन
कुछ फिराक़ अपनी सुनाओ कुछ जमाने की कहो।

पुस्तक इस तथ्य से भी पाठकों को परिचित कराती है कि फ़िराक़ क्लासिकल गजल के अंतिम और आधुनिक ग़ज़ल के पहले शायर थे। यूं भी मौलिक रूप से फिराक़ ग़ज़ल के शायर हैं। उन्होंने अपने शायरी जीवन की शुरुआत ग़ज़ल से ही की है और अंत समय तक गजल ही उनकी मनपसंद शायरी की शैली थी। फ़िराक़ का यह कथन कितना गहरा अर्थ लिए है, ''गौर से सुनना मेरी शायरी में मेरी सदी बोलती है''।

पुस्तक के अगले और महत्वपूर्ण अध्याय फिराक़ की नज़्म निगारी, जिसमें नज़्म के बारे में कहा गया है कि उर्दू नजम का इतिहास उतना ही पुराना है जितना उर्दू शायरी का फिर भी एक आम राय कही जाती है कि नजम आधुनिक काल में ही पैदा हुई और इस पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव है। डॉक्टर खलील खलीलुरहमान आजमी के अनुसार उर्दू शायरी के प्रारंभिक काल से 1858 ई. तक और उसके कुछ दिनों बाद तक हमारे यहां ग़ज़ल अभिव्यक्ति का सबसे लोकप्रिय माध्यम रही है परंतु नज़्म लेखन के भी कुछ रूप प्रचलित रहे हैं जैसे कसीदा, मसनवी शहर और आशोब। इसी प्रकार नज़्म भी दूसरी किस्मों के अंतर्गत आती हैं। शोधार्थी का मानना है कि मसनवी का यही भिन्न रूप नज़्म है जो आगे चलकर एक अलग विधा का रूप धारण करती और विकसित होती है। नज़्म के पुरोधाओं यथा मीर, सौदा,

नजीर अकबराबादी, मौलवी मोहम्मद हुसैन आजाद, हाली, शिबली, जफर अली खां, चकबस्त, सरूर जहानाबादी, तिलोकचंद मेहरूम, खुशी मोहम्मद नाजिर, शौक़ किदवाई बेनजीर शाह और हां आधुनिक काल में हरदिल अजीज इकबाल, जोश, फैज, मजाज, सरदार जाफरी, कैफी आजमी, जांनिसार अख्तर, वामिक जौनपुरी, सागर मुल्ला, रविश, अहमद नदीम कासमी, नूनमीम राशिद, अख्तर अंसारी, शमीम किरहानी, मजरूह, परवेज शहीदी, साहिर लुधियानवी, राही मासूम रजा, नरेश कुमार शाद, राशिद, अल्ताफ गौहर, मुख्तार सिद्दीकी, अख्तरुल ईमान, खलील उल रहमान, आजमी, वहीद अख़तर के नाम और कुछेक के योगदान विस्तार से वर्णित किए गए हैं। सार रूप में कहा जा सकता है कि फ़िराक़ उर्दू नज़्म के एक महत्वपूर्ण शायर हैं जिन्होंने उर्दू नज़्म की परंपरा को न केवल बल दिया है अपितु प्रयोग और विस्तार भी किए हैं।

फ़िराक़ की रुबाइयां अध्याय में रूबाई के अर्थ से शुरू होता है। रुबाई अरबी शब्द है, इसका अर्थ चार होता हैं। कला के शब्दों में रुबाई उस विधा को कहते हैं जिसके चार मिसरों में पूरी बात कह दी जाती है। इन मिसरों में पहला दूसरा और चौथा मिसरों एक ही काफिया है और एक ही रदीफ में होता है। तीसरा मिसरा अगर हम काफिया और हम रफीफ नहीं है तो कल की दृष्टि से कोई बुराई नहीं। फारसी की यह विधा रही है। यह भी कम कौतूहलपूर्ण नहीं है कि इस विधा का अविष्कार अजम यानी गैर अरब के लोगों के द्वारा किया गया। पुस्तक रूबाई की जानकारी और उसके पुराधाओं और उनके योगदान को बताती चलती है। सन् 1929 और सन 1945 के मध्य कही गई रूबाई, विषय और शैली की दृष्टि से पारंपरिक रूबाई हैं परंतु सन 1945 के बाद रूबाई और निखर कर आती हैं। इसमें फिराक गोरखपुरी एक अलग स्थान पर नजर आते हैं। विषय और शैली की दृष्टि से फ़िराक़ ने उन रूबाइयों में हिंदुस्तानी सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने का सफल प्रयास किया है। हिंदू देवमाला के विभिन्न नाम और उनकी घटनाओं के संदर्भ में वह हिंदुस्तान की प्राचीन सर्वोत्तम आध्यात्मिक मूल्य और महान सांस्कृतिक परंपराओं का आभास दिलाते हैं। इसीलिए उन्होंने उन रूबाइयों को 'मादरे हिंद' के शीर्षक से अपने काव्य संग्रह में शामिल किया है। उदाहरण के तौर पर यह रुबाई :

कन्याएं अजल की है सहाबत जिनमें/राधा की अदाओं की नजाकत जिनमें/तो आज भी जन रही हैं ऐसे बच्चे/है कृष्ण की शोखी व शरारत जिनमें। पाठक को अन्य अध्यायों यथा फन कलात्मकता और हरफे आखिर में भी फ़िराक़ की शायरी और विभिन्न संस्कृतियों के महत्वपूर्ण कारकों और उनके सुंदर उदाहरण पढ़ने को मिलते हैं।

उपरोक्त प्रस्तुति को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि यह संतुलित और शोधपूर्ण जिल्द है जो फ़िराक़ गोरखपुरी के साथ–साथ उनका जमाना उनके प्रेरणा देने वाले व्यक्तित्व, समकालीन विद्वान, उर्दू भाषा और गजल, नज़्म, रूबाई और अन्य विधाओं का इतिहास और अद्यतन स्थिति एक ही स्थान पर पाठकों को पठनीयता का आनंद प्रदान करती है।

जिस पर भी इस पुस्तक में कुछ कमियां अखरती हैं। यदि फ़िराक़ गोरखपुरी पर जानकारी केवल उन्हीं को केंद्र में रखकर मझौले पुस्तकीय आकार में दी जाती।

पुस्तक में कहीं कहीं प्रूफ रीडिंग की कमी रह गई है। ISBN यदि अंकित होता तो विदेशों में भी पाठक लाभान्वित होते। क्या ही अच्छा होता कि फ़िराक़ गोरखपुरी और अन्य पुरोधाओं के चित्र या विभिन्न समय की घटनाओं के चित्र भी दिए गए होते।

कुल मिलकर, एक सराहनीय पुस्तकीय शोधपूर्ण प्रयास जो आने वाले समय में फ़िराक़ गोरखपुरी पर अन्य कई पुस्तकों के प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

पुस्तक : फ़िराक़ की शायरी
प्रकाशक : डॉक्टर अफगानुल्लाह ख़ां
मेमोरियल सोसायटी, अबू बाजार, ऊंचवा, गोरखपुर।
लेखक : डॉक्टर अफगानुल्लाह ख़ां
अनुवादक : डॉ. वजाहत हुसैन रिजवी
मूल्य : ₹500 मात्र
कुल पृष्ठ : 506
आईएसबीएन : अंकित नहीं

पता : फ्लैट–बी–वन, मानसरोवर अपार्टमेंट, प्लॉट नंबर तीन, सेक्टर 5, द्वारका, नई दिल्ली–110075

मो. : 7982620596

क्या ये भोर है

–कौशिकी भरद्वाज

कुछ यादें रह जाती हैं
कुछ बातें रह जाती हैं
दिल के कई अल्फाज़ अनकहे रह जाते हैं
एक टीस रह जाती है
एक आह रह जाती
लम्हें समझ ना पाते हैं
दिल समझा ना पाता है
क्यूँ शोर मचा है मन के गलियारे मे
क्यों खो गए हैं होके भी किनारे पे
क्यों मन बेचैन रे
चाहे दिन हो या रैन रे
क्यों सन्नाटे मे ये शोर है
क्या होने वाली भोर है
मन की पुकार को सुनले मेरे यार
बातें करके चार
ले तू भोर को स्वीकार
कुछ बातें बीत जाती हैं
लम्हे चले जाते हैं
आखिर उस सन्नाटे मे शोर
के बाद ही तो भोर आती है।

◆

पता : 5/8, राजकीय कॉलोनी,
बादशाह नगर, लखनऊ
मो. : 7905193832

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख प्रकाशन

उत्तर प्रदेश मासिक	:	समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
नया दौर (उर्दू)	:	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
वार्षिकी (हिन्दी/अंग्रेजी)	:	उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र।

महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.
दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए विशाल सिंह, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित